साप्ताहिक

पृथ्वी पर हम सब समय माया के यात्री हैं

समय माया

R.N.I. No.: MP/HIN/2006/20685

प्रधान संपादक- अजमेरा एस.पी. कुमार
B.COM., M.A., LLB, CAIIB, DLLLW&PM

Webite: www.samaymaya.com
Email: samaymaya@gmail.com
samaymaya@rediff.com

Cell: +91 9425125569
+91 9479535569

(C) All Copyrights reserved with chief editor, do not publish any matter without prior written permission

In case of any dispute, may be solved only in Indore Court Jurisdiction

वर्ष 17 | अंक 18 | प्रति सोमवार इंदौर, 4 दिसंबर से 10 दिसंबर 2023 | पृष्ठ 8 | मूल्य 5/- रुपए

चीन के बच्चों की बीमारी को भयावह बताने का षड्यंत्र

भारतीय रसोइयों में रखें मसाले बीमारी को नियंत्रित करने में सक्षम

चीन में बच्चों को होने वाले निमोनिया की कहानी को पूरे देश और दुनिया में कोरोना के नए प्रकार की बीमारी की नई लहर के रूप में दर्शाया जा रहा है जबकि सच यह भी है कि चीन की आबादी 150 करोड़ है तो स्वाभाविक सी बात है की बदलते हुए मौसम में लगभग कुल आबादी के 20% के 30 करोड़ में 50% बच्चे अर्थात 15 करोड़ बच्चे अगर सर्दी खांसी जुकाम के शिकार हो भी गए तो कोई नई बात नहीं दूसरी तरफ चीन में भी भारत की तरह आयुर्वेदिक या पारंपरिक औषधीयों का उपयोग करके भी स्वस्थ रहा जा सकता है। परंतु तिल को ताड़ राई को पहाड़ बनाकर प्रस्तुत करने का मूल उद्देश्य रहता है बहुराष्ट्रीय कंपनियों की औषधियां बिकें। उनका शॉपिंग मॉल का माल बिके।

डरिए नहीं डराइए नहीं, थोड़े से प्रयासों से नियंत्रण पाइये

भारत में भी 140 करोड़ की आबादी के अगर 28 करोड़ बच्चों मै से जो 14 करोड़ बच्चे अगर सर्दी खांसी जुकाम बुखार आदि का शिकार हो गए तो नया क्या हुआ।

परंतु बहुराष्ट्रीय दवा उत्पादक कंपनियों का रखैला विश्व घातक संगठन इन सब बीमारियों को जो बदलते मौसम में हजारों साल से होती आई हैं। और प्राकृतिक आवश्यकता भी है इन ऐसे सारे अवसरों को वह अपना माल बेचने अपने षड्यंत्र को स्थापित करने का अच्छा अवसर मानता है। यही कारण है चीन की सर्दी खांसी जन्य बीमारियों में निमोनिया की बीमारी जो 20 प्रकार से ज्यादा का होता है। को एक भयावह रूप देकर अपने पुराने षडयंत्रों जालसाजियों को सच सिद्ध करना चाहता है।

भारत में बदलते मौसम में होने वाली बीमारियों को नियंत्रित करने के लिए भारत के सनातनी घरों में रखें स्वाद व स्वास्थ्य बढ़ाने वाले मसाले से ही आसानी से किया जाता रहा है और किया जा सकेगा। आयुर्वेद कीसार्वजनिक विशेषज्ञों कीसंख्या इस कड़ी में समय माया प्रस्तुत कर रहा है।

सर्दी खांसी का आयुर्वेदिक इलाज

बदलते मौसम और वायु प्रदूषण (Air Pollution) के कारण आजकल सर्दी और खांसी की समस्या से कई लोग परेशान हैं। शरीर पर सर्दी का असर होता है तो सबसे पहले गले में दर्द की शिकायत होती है और फिर अन्य लक्षण नजर आते हैं। खांसी होने से पहले गले में खराश (Sore Throat) की समस्या शुरू होती है, इंफेक्शन के कारण गले में दर्द और सूजन भी हो सकती है। ऐसी स्थिती में आप अपनी किचन में रखे मसालों का इस्तेमाल करके अपनी समस्या को कम कर सकते हैं, इस लेख में हम आपको हल्दी और अदरक के इस्तेमाल से सर्दी और खांसी की समस्या कम करने का तरीका बताने वाले हैं। इस लेख में रामहंस चेरिटेबल हॉस्पिटल, सिरसा के आयुर्वेदिक डॉक्टर श्रेय शर्मा से जानेंगे सर्दी, खांसी और खराब गले के लिए हल्दी और अदरक का इस्तेमाल कैसे करें?

सर्दी जुकाम की आयुर्वेदिक दवा

आयुर्वेद में हर मर्ज का इलाज है, आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति से छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी बीमारी का इलाज किया जा सकता है। सर्दी, खांसी और गले की खराश (Sore Throat) की समस्या के लिए घर पर आप आसानी से कुछ आयुर्वेदक उपायों को अपनाकर राहत पा सकते हैं।

अदरक और हल्दी के गुण अदरक

विटामिन C, एंटीऑक्सीडेंट्स और एंटी-इन्फ्लेमेटरी गुणों से भरपूर अदरक का इस्तेमाल भोजन से लेकर चाय और औषधियों को बनाने तक में किया जाता है। अदरक शरीर को बदलते मौसम में होने वाले संक्रमण से बचाने में मदद करता है, इसके औषधीय गुणों का उपयोग सर्दी, खांसी, और जुकाम से बचाव में किया जा सकता है।

(शेष पेज 4-5 पर)

मूढ़ मोदी के मित्र चीन को भारत में घुसपैठ का नया आमंत्रण

म्यांमार में लड़ाई में तेजी भारत के लिए उत्तर पूर्व से हमले का नया पैंतरा

म्यांमार की सेना और जुंटा विरोधी ताकतों के बीच लड़ाई से भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र, विशेषकर मणिपुर और मिजोरम राज्यों में सुरक्षा प्रभावित हो सकती है

नई दिल्ली। पिछले हफ्ते म्यांमार की सेना और जुंटा विरोधी ताकतों के बीच लड़ाई में तेजी से बढ़ोतरी का भारत के रणनीतिक पूर्वोत्तर क्षेत्र, खासकर मणिपुर और मिजोरम राज्यों में सुरक्षा पर प्रभाव पड़ सकता है। यहां प्रतिरोध समूहों द्वारा शुरू किए गए 'ऑपरेशन 1027', म्यांमार के विभिन्न हिस्सों में विकास और भारत के लिए निहितार्थों पर करीब से नज़र डाली गई है। म्यांमार राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सेना के सदस्य 12 नवंबर को म्यांमार के शान राज्य में कुनलॉन्ग टाउनशिप में जब्त की गई सेना की पैदल सेना बटालियन के सामने एक तस्वीर के लिए पोज़ देते हुए। (एपी)

श्री ब्रदरहुड एलायंस, जिसमें म्यांमार नेशनल डेमोक्रेटिक अलायंस आर्मी (एमएनडीएए), अराकान आर्मी और ताआंग नेशनल लिबरेशन आर्मी (टीएनएलए) शामिल हैं,

(शेष पेज 2 पर)

विद्युत कं. की लूट का तांडव, मनमानी बिलिंग, कटौती

विद्युत लूट रोकने जनता बाहर निकल कंपनियों के विरुद्ध करे आंदोलन

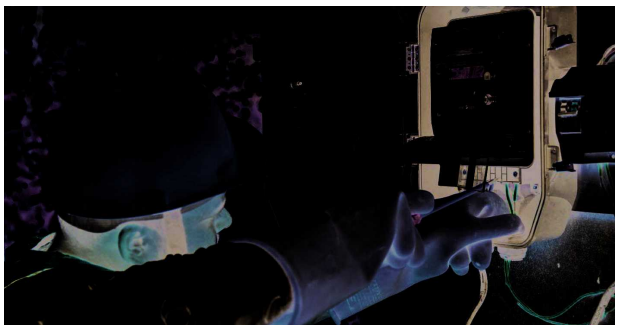

देश में कांग्रेस सरकार ने 1990-91 में अमेरिकी षड्यंत्रकारी विश्व भयावह व्यापार संगठन से जोर जबरदस्ती मेंनरसिम्हा राव सरकार ने समझौते पर हस्ताक्षर अवश्य किए थे। इस व्यापार संगठन का जिसे अमेरिकी जालसाज डकैत बहुराष्ट्रीय कंपनियां जिनका उद्देश्य था राष्ट्रों की सरकारों को खरीदवहां के प्राकृतिक एवं मानव निर्मित संसाधनों परजालसाजी पूर्ण कानून के माध्यम सेकब्जा करमोटा लाभ कमाने के लिए चलाती हैं। कांग्रेस की नरसिम्हा राव ने इन समझौतो पर दबाव बस हस्ताक्षर अवश्य किये पर देश में लागू नहीं किया। परंतु

घंटों बिजली बंद, प्रिंटेड बिजली के बिल नहीं, पर्याप्त रखरखाव व साधन नहीं, संविदा कर्मियों से बिना प्रशिक्षण मजदूरी पर कार्य

98 के अंत में आई अटल बिहारी सरकार उसके खास जालसाज मंत्री स्वर्गीय प्रमोद महाजन व अरुण सूरी ने मोटा पैसा लेकर, वह सासाकीए संस्थाओं को बेंच मोटा पैसा कमाने के लिएविनिवेश नीति के अंतर्गत देश के सभी राज्यों के लाभकारी विद्युत मंडलों को कंपनी में परिवर्तित कर दिया

(शेष पेज 6 पर)

साप्ताहिक समय माया

संपादकीय

जन लोभ, जालसाजी देश को बना देगी गुलाम

इस देश को यदि हजार दो हजार साल पहले की इतिहास का अध्ययन किया जाए तो निष्कर्ष निकलता है कि हमारे देश को गुलाम बनाने में हमारे देश की नारियों की महती भूमिका रही। यदि इन्होंने लालच और भय से दूर अपने पति पिता पुत्र को प्रेरणा देकर शत्रुओं से लड़ना सिखाया होता तो शायद हम हजारों साल से गुलाम नहीं होते। वह स्थिति अभी बदली नहीं। एक घोर लालची जालसाज सत्ताधीश घोषणा करता है। रु. 3000 देने की और हम अपनी मूलभूत आवश्यकताओं निशुल्क शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़कें को भूल जो हमारा संवैधानिक अधिकार है, कई सैकड़ों गुना जिसमें शिक्षा स्वास्थ्य स्वास्थ्य सड़कों बिजली के साथ चारों तरफ दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं भोजन सब्जी तेल पर पेट्रोल गैस आदि में भारी लूट का तांडव जो लाडली बहनों को दिया जा रहा है उससे कई गुना ज्यादा लूट की जाएगी हमारी महिलाओं को समझ में नहीं आया। सत्ताधीश पिछले 18 सालों से लगातार लूट का तांडव कर रहे हैं जहां 250 वस्तुओं पर पहले विक्रय बाद में वेट लगता था। भाजपा ने आने के बाद 1500 वस्तुओं और सेवाओं पर कर लगा दिया और आने वाले समय में निश्चित ही बिजली, पानी, शिक्षा, स्वास्थ्य सड़कों के टोल पर भी जीएसटी ठोक दिया जाएगा। जिससे न केवल बिजली वर्णन जो अभी कोचिंग की ट्यूशन फीस लगता है वही हाल फिर स्कूलों कॉलेजों इसमें ऊपर की लिखोखाने पीने की खाद्य वस्तु पैकेज खाद्य बुद्धि वास्तुखाद्य वस्तुओं पैकेज्ड के उपयोग लगभग 30% और ज्यादा महंगी हो जाएगी। दूसरी तरफ प्रदेश मैं करीब चार लाख करोड रुपए का कर्जा, कर्ज ले लेकर बांटा जा रहा है। उसका भुगतान भी उनके साथ उनके पति पिता पुत्र को भी करना पड़ेगा। परंतु तात्कालिक लाभ के चक्कर मेंआंख मींच अपने मताधिकारों का बिना सोचे समझेदुरुपयोग करने का परिणाम तो हर परिवार समाज और प्रदेश की जनता को भुगतना हीं पड़ेगा दूसरी तरफ निश्चित ही सत्ताधीश चारों तरफ भ्रष्टाचार करने के बाद में भी छल, बल, दल, धन, शाम दाम, दंड, भेद, हरनीति को अपनाकर जनता कोवह चला से भ्रमित करचारों तरफ सेन केवल मानव निर्मित वरन प्राकृतिक स्त्रोतों का यथा हवा पानी वनों खनिजो रेती आदि का भी हर तरह से न केवल दोहन कर जहां यह स्वयं असक्षम पाते हैं वहां देसी विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों कोदोहन करने के लिए बेचे गिरवी करने या पट्टे पर देने का षडयंत्र कर जनता को उसके समुचित लबों से वंचित कर उसे पर लूट का तांडव कर अपने व्यक्तिगत स्त्रोतों को मजबूत व विकसित करने में लगे हुए हैं। चुकी 18 वर्ष सत्ता में हो चुके हैं इसलिए सत्ता के छल बल से भली भांति परिचित होने के साथ उसका दुरुपयोग करने में भी श्रेष्ठता प्राप्त कर ली है। इसलिए वह सारे षड्यंत्र भ्रष्टाचार लूट डकैती अपराध कानूनों का उल्लंघन करने से भी गुरुजी नहीं करती सारे प्रशासनिक अधिकारी कर्मचारी एक तरफ भारतीय ना कर तो दूसरी तरफ आवश्यक कर्मचारियों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए संविदा पर नियुक्ति कर पूरी तरह से गुलाम बना उन्होंने पूरी तरीके से पूरे शासकीय ढांचे को पंगु और निस्तेज कर दिया है। उनके हिसाब से नाचने के लिए मजबूर है।

म्यांमार में लड़ाई में तेजी भारत के लिए उत्तर पूर्व से हमले का नया पैंतरा

पेज 1 का शेष

ने चीन की सीमा से लगे पूर्वोत्तर शान राज्य में ऑपरेशन 1027 (आक्रामक शुरुआत की तारीख के नाम पर नाम) लॉन्च किया।

अन्य छोटे समूहों के समर्थन से गठबंधन ने कथित तौर पर 135 से अधिक सैन्य ठिकानों पर कब्ज़ा कर लिया है, बड़ी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद जब्त कर लिया है, और चीन के साथ व्यापार मार्गों पर नियंत्रण कर लिया है, जिसमें प्रस्तावित रेल लिंक के लिए चिनश्वेहाव के पास कुनलॉन्ग शहर भी शामिल है। चीन के साथ म्यांमार राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सेना के सदस्यों ने 28 अक्टूबर, 2023 को म्यांमार के चिनश्वेह शहर में एक पहाड़ी पर म्यांमार की सेना चौकी से कथित तौर पर जब्त किए गए हथियारों के साथ एक तस्वीर खिंचवाई ***(एपी के माध्यम से कोकांग ऑनलाइन मीडिया)***

इसके बाद चिन राज्य में चिन नेशनल फ्रंट (सीएनएफ), काचिन राज्य में काचिन क्षेत्र पीपुल्स डिफेंस फोर्स (मोगांग), सागांग क्षेत्र में विभिन्न पीपुल्स डिफेंस फोर्स (पीडीएफ) समूहों, राखीन राज्य में अराकान सेना द्वारा इसी तरह के हमले किए गए। और करेनी राज्य में करेनी नेशनलिटीज़ डिफेंस फोर्स (केएनडीएफ), करेनी सेना और करेनी नेशनल पीपुल्स लिबरेशन फ्रंट (केएनपीएलएफ)। चिन और काचिन राज्य और सागाइंग क्षेत्र भारत की सीमा पर हैं, और सीएनएफ लड़ाके सप्ताहांत में भारत के साथ दो आधिकारिक सीमा पार बिंदुओं में से एक, रिहखावदार पर कब्जा करने में शामिल थे।

दोनों पक्षों के हताहत होने की खबरें हैं, विद्रोही समूहों ने लगभग 90 सैन्यकर्मियों को मारने का दावा किया है। जुंटा ने शान, चिन और करेनी राज्यों और सागांग क्षेत्र के कई शहरों में मार्शल लॉ घोषित कर दिया है। लड़ाई ने सुरक्षा कर्मियों सहित हजारों म्यांमार नागरिकों को मिजोरम भागने के लिए मजबूर कर दिया है।

मुख्य प्रतिरोध समूह कौन से हैं?

श्री ब्रदरहुड एलायंस, जो पहली बार 2016 में उभरा, ने चल रहे हमलों का नेतृत्व किया है। ऑपरेशन 1027 की घोषणा करते हुए एक बयान में, गठबंधन ने कहा कि अभियान 'नागरिकों के जीवन की रक्षा करने, आत्मरक्षा के हमारे अधिकार का दावा करने, हमारे क्षेत्र पर नियंत्रण बनाए रखने और चल रहे तोपखाने हमलों और हवाई हमलों का दृढ़ता से जवाब देने' की इच्छा से प्रेरित था। म्यांमार की सेना. इसने कहा कि यह 'दमनकारी सैन्य तानाशाही को खत्म करने के लिए भी समर्पित है, जो पूरे म्यांमार की आबादी की साझा आकांक्षा है'।

म्यांमार नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस आर्मी (MNDAA) को श्री ब्रदरहुड एलायंस में सबसे मजबूत समूह माना जाता है और इसने ऑपरेशन 1027 का नेतृत्व किया है। समूह, जिसका गठन 1989 में हुआ था और माना जाता है कि इसमें लगभग 6,000 लड़ाके हैं, ने कहा है कि उसने नियंत्रण ले लिया है चिनश्वेहाव में चीन के साथ मुख्य सीमा पार।

2009 में बनाई गई और राखीन राज्य में स्थित अराकान सेना, यूनाइटेड लीग ऑफ अराकान (ULA) की सैन्य शाखा है। इस समूह का नेतृत्व ट्वान मरत निंग द्वारा किया जाता है और माना जाता है कि इसमें 35,000 से अधिक लड़ाके हैं जो काचिन, राखीन और शान राज्यों में फैले हुए हैं।

ताआंग नेशनल लिबरेशन आर्मी (टीएनएलए) पलाउंग स्टेट लिबरेशन फ्रंट (पीएसएलएफ) की सशस्त्र शाखा है और सरकार के साथ युद्धविराम समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद 2005 में इसे निरस्त्र कर दिया गया था। इसे 2011 में पुनर्गठित किया गया था और माना जाता है कि वर्तमान में इसमें लगभग 8,000 सैनिक हैं।

म्यांमार की राज्य प्रशासन परिषद ने कैसे प्रतिक्रिया दी है?

राज्य प्रशासन परिषद (एसएसी) ने जवाबी हमलों के लिए जमीनी बलों को जुटाने और कई स्थानों पर हवाई हमले करने की कोशिश करके विद्रोहियों के हमलों का जवाब दिया है। 2021 के तख्तापलट के बाद म्यांमार के राष्ट्रपति के रूप में नियुक्त किए गए माइंट स्वे को पिछले हफ्ते राज्य संचालित मीडिया ने यह कहते हुए उद्धृत किया था कि अगर सरकार 'सीमा क्षेत्र में होने वाली घटनाओं' को प्रभावी ढंग से प्रबंधित नहीं करती है तो देश 'विभिन्न हिस्सों में विभाजित हो जाएगा'।

सैन्य नेताओं ने दावा किया है कि उन्होंने स्थिति पर फिर से नियंत्रण पा लिया है और एमएनडीएए को 'बड़ी संख्या में हताहत' किया है।

भारत के लिए इसका क्या मतलब है?

हाल ही में म्यांमार से मिजोरम में हजारों शरणार्थियों की आमद के अलावा, भारत के उत्तर-पूर्व में सीमावर्ती क्षेत्रों में तनाव फैलने को लेकर चिंताएं बढ़ रही हैं। म्यांमार के चिन जातीय समूह का मणिपुर में कुकी के साथ मजबूत संबंध है, और मणिपुर के कई मैतेई उग्रवादी समूहों की म्यांमार के सागांग क्षेत्र में मौजूदगी है और माना जाता है कि उन्हें जुंटा का संरक्षण प्राप्त है। विशेषज्ञों का मानना है कि इसका सी पर प्रभाव पड़ सकता है।

भारत को म्यांमार में अपनी गतिविधियों पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता हो सकती है।

13 नवंबर को सीमावर्ती क्षेत्रों में सैन्य जुंटा और प्रतिरोध बलों के बीच ताजा लड़ाई शुरू हो गई, जिससे लगभग 5,000 लोग भारत में विस्थापित हो गए। प्रतिरोध बल कई मोर्चों पर सैन्य शासन को चुनौती दे रहे हैं, देश पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए शासन की क्षमताओं का काफी परीक्षण कर रहे हैं। भारत-म्यांमार साझा सीमा क्षेत्र मणिपुर में मैतेई और सीमा पार कुकी समुदायों के बीच जातीय संघर्ष के कारण भी अशांत है।

7 नवंबर को ली गई इस तस्वीर में एक व्यक्ति लैशियो टाउनशिप में म्यांमार के सैन्य अड्डे की दिशा से धुआं उठता देख रहा है।(एएफपी)

म्यांमार में बढ़ते संकट और मणिपुर में जारी जातीय संघर्ष के कारण इस क्षेत्र में बढ़ते तनाव ने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा पैदा कर दिया है, जिसमें विद्रोही समूहों द्वारा अधिक अस्थिरता की संभावनाएँ हैं। भारत के रक्षा मंत्रालय का एक हालिया बयान इस बात की पुष्टि करता है कि म्यांमार में शांति और स्थिरता 'भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण' है। इस सीमा क्षेत्र में मुद्दों को हल करने के लिए एक सुव्यवस्थित दृष्टिकोण की आवश्यकता हो सकती है, और नई दिल्ली की म्यांमार नीति में बारीकियाँ पहला कदम हो सकती हैं। म्यांमार में भारत की हिस्सेदारी जटिल और बहुआयामी है। अपर्याप्त सैन्य बुनियादी ढांचे के कारण भारत-म्यांमार सीमा का इलाका विशेष रूप से असुरक्षित है। सीमा सुरक्षा सैन्य शासन के साथ नई दिल्ली के संबंधों का प्राथमिक चालक है। भारत-म्यांमार सैन्य सहयोग ने विद्रोही समूहों को नियंत्रण में रखने की कोशिश की, लेकिन म्यांमार के सीमावर्ती क्षेत्रों पर जुंटा का नियंत्रण हाल ही में कम हो गया है। विद्रोही समूह फिर से उभर रहे हैं और खुली सीमाओं ने उन्हें सुरक्षा कर्मियों से बचने की अनुमति दे दी है। चूंकि म्यांमार में संघर्ष तेज हो गया है और प्रतिरोध ताकतें सीमा क्षेत्र में सुरक्षा हितधारकों के रूप में उभर रही हैं, इसलिए उन पर विचार करना महत्वपूर्ण हो सकता है।

नई दिल्ली म्यांमार में बीजिंग का मुकाबला करना चाहती है, जो जुंटा के साथ अपने संबंधों के अलावा जातीय सशस्त्र संगठनों (ईएओ) के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखकर 'गाजर और छड़ी' की नीति अपनाता है। भारत के देश में अन्य हित भी हैं, जैसे कनेक्टिविटी बुनियादी ढांचा। कलादान मल्टीमॉडल परियोजना दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत के व्यापार को बढ़ावा देगी और पास में चीन समर्थित क्याउकप्यू बंदरगाह को भी संतुलित करेगी। परियोजना में पहला नोड अब कार्यात्मक है, लेकिन चिन राज्य में पलेतवा से पूर्वोत्तर भारत के मिजोरम में ज़ोरिनपुई तक सड़क मार्गों के माध्यम से कनेक्टिविटी चिन राज्य में राजनीतिक स्थिति पर निर्भर होगी, जहां चिन प्रतिरोध बल बड़े पैमाने पर क्षेत्र को नियंत्रित करते हैं। 13 नवंबर को चिन बलों के हमलों ने फलम टाउनशिप के रिखावदार और भारतीय सीमा पर ख्वामावी टाउनशिप में जुंटा ठिकानों पर अपना नियंत्रण बढ़ा दिया है। इससे पहले, उसने सीमा से लगे तमू जिले के खम्पत नामक व्यापारिक शहर पर भी कब्ज़ा कर लिया था। प्रतिरोध सीमा क्षेत्र पर अधिक नियंत्रण हासिल करने के लिए दो और शिविरों से जुंटा को खत्म करना चाहता है। ब्रदरहुड अलायंस द्वारा शान राज्य में ऑपरेशन 1027, जिसमें राखीन राज्य की अराकान सेना शामिल थी, ने अक्टूबर के अंत में कई शहरों में 100 से अधिक शिविरों से सेना को बाहर निकाल दिया। भारत और बांग्लादेश की सीमाओं के करीब राखीन राज्य में विपक्ष के खिलाफ जुंटा गोलाबारी और कार्रवाई का असंगत उपयोग कर सकता है।

चिन और म्यांमार की बड़े पैमाने पर बामर सेना के बीच दुश्मनी कम से कम द्वितीय विश्व युद्ध से चली आ रही है। चिन ने जापानी आक्रमणकारी सेनाओं के खिलाफ ब्रिटिश और भारतीय सैन्य अधिकारियों के साथ लड़ाई लड़ी, और बामर्स को एक कब्जे वाले दुश्मन के सहयोगियों के रूप में देखा। ब्रिटिशों द्वारा चिन राज्य जैसे सीमांत क्षेत्रों से चुनिंदा रूप से 'मार्शल जातियों' की भर्ती की गई, जिससे बमार स्वतंत्रता नेताओं के बीच पहाड़ी जातीयताओं के प्रति अविश्वास पैदा हो गया। चिन ने जुंटा के प्रति उग्र प्रतिरोध प्रस्तुत किया है, जिसने चिन क्षेत्रों के बड़े हिस्से पर किसी भी प्रभावी नियंत्रण की कमी के कारण हवाई हमलों का सहारा लिया है। जुंटा के खिलाफ लड़ाई में चिन नेशनल फ्रंट (सीएनएफ) के साथ कई चिन प्रतिरोध ताकतें एक साथ आई हैं, जिनमें कुछ भारतीय जातीय समूह भी शामिल हैं, जो कैंप विक्टोरिया में सीएनएफ मुख्यालय जैसे सीमा के करीब और गहरे हवाई हमलों को आकर्षित कर रहे हैं। चिन राज्य के रणनीतिक थैंटलांग शहर में भारी बमबारी ने पूरी आबादी को पास के राहत शिविरों और भारत के मिजोरम राज्य में स्थानांतरित कर दिया है।

विपक्ष की तुलना में शासन की बेहतर सैन्य क्षमताओं को देखते हुए, नई दिल्ली के जुंटा के साथ संबंधों में कोई बड़ा बदलाव नहीं देखा जा सकता है, लेकिन असंतुष्टों पर कठोर कार्रवाई और गंभीर मानवीय स्थिति के प्रति उदासीनता, जुंटा शासन की भारी अंतरराष्ट्रीय आलोचना को आकर्षित करती रहेगी। भले ही आर्थिक प्रतिबंध इसे रोकने में विफल रहे हों, फिर भी उनके जारी रहने और बढ़ने की उम्मीद की जा सकती है, जिससे राजनयिक व्यस्तताओं के लिए जगह कम हो जाएगी। नेपीटॉ के साथ बातचीत में इस बात पर प्रकाश डाला जाना चाहिए कि आने वाले समय में सहयोग के रास्ते और अधिक प्रतिबंधित हो सकते हैं। म्यांमार में कई सुरक्षा हितधारकों को देखते हुए, किसी एक खिलाड़ी पर निर्भर रहना भारत के दीर्घकालिक हितों के लिए उपयुक्त नहीं हो सकता है।

अडानी की नवयुग इंजीनियरिंग सिल्क्यारा गुफा में बचे 41 मजदूर

न अनुभव, ज्ञान का परिणाम था, गुफा हादसा

मोदी मित्र के लिए नियम कानूनों का कोई बंधन नहीं, बस चाहिए मोटी कमाई

उत्तराखंड हॉल ही में सिल्क्यारा इंडरगांव गुफा का रू. 12000 करोड़ का राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अंतर्गत चार धाम सभी ऋतुओं मैं उपयोगी सड़क के काम में सुरक्षा अंकेक्षण के साथ ही उसकी विस्तृत परियोजना भिवानी मेंपूरी जालसायन की गई जहां कच्ची मिट्टी थी वह हार्ड रॉक दिखा 10 गुना भुगतान वसूली, के साथगुफा बनाते समयविस्तृत परियोजना के अंतर्गत बनाए जाने वाले तीन सुरक्षा रास्तों की भी अनदेखी करने के साथ सभी प्रकार की अनदेखी की गई।

शुरुआती प्लान में बाहर निकलने के 3 रास्ते थे, कंपनी ने एक भी नहीं बनाया

सिल्क्यारा-डंडारगांव टनल का काम सेफ्टी ऑडिट के बाद भी जारी रहेगा, क्योंकि यह टनल 12 हजार करोड़ रुपए के महत्वाकांक्षी चार धाम ऑल वेदर रोड प्रोजेक्ट का अहम हिस्सा है। हालांकि इसके निर्माण की खामियों पर उठ रहे सवालों पर कंस्ट्रक्शन एजेंसी और केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्रालय अभी चुप है।

पता चला है कि टनल प्रोजेक्ट की डीपीआर और निर्माण में बड़ा अंतर है। सरकारी वेबसाइट infracon.nic.in पर जून 2018 में अपलोड इस प्रोजेक्ट का आरएफपी (रिक्वेस्ट फॉर प्रपोजल) देखेंगे तो नेशनल हाईवे एंड इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कॉरपोरेट लिमिटेड के बनाए टनल का प्लान समझ आएगा। इसमें इमरजेंसी में टनल से बाहर निकलने के तीन रास्ते थे, लेकिन कंपनी ने अब तक एक भी नहीं बनाया। टनल के निरीक्षण में भी विशेषज्ञों ने इसकी अनदेखी की।

सिल्क्यारा टनल चूने की चट्टान पर बनी, इसके ढहने का खतरा ज्यादा

भूवैज्ञानिक नवीन जुयाल, भूवैज्ञानिक रवि चोपड़ा और भूवैज्ञानिक और पर्यावरणविद एसपी सती ने बताया कि इस प्रोजेक्ट का भू वैज्ञानिक और भू तकनीकी सर्वेक्षण ठीक से नहीं हुआ। सुरंग का स्थान मेन सेंट्रल थ्रस्ट के करीब है और यह क्षेत्र भूकंप संभावित है। सर्वेक्षण में इस अहम तथ्य की अनदेखी की गई। इस प्रोजेक्ट की डीपीआर और निर्माण कंपनी के काम की गहन जांच होना चाहिए।

उन्होंने कहा कि सिल्क्यारा सुरंग चूने की चट्टान (तलछटी चट्टान) वाले क्षेत्र में बनाई जा रही है, जिससे इसके बार-बार ढहने का खतरा है। इसके दो संभावित कारण हैं। पहला- ब्लाइंड शियर जोन की संभावना, जिसकी पहले रिपोर्ट नहीं की गई थी। दूसरा- सुरंग बनाने के लिए विस्फोटकों का उपयोग। यह घटना सुरंग निर्माण सुरक्षा

प्रोटोकॉल से समझौते का परिणाम है।

टनल का A To Z : सुरंग की खुदाई में भी गलती की: मंत्रालय की एस्टिमेट्स समिति की रिपोर्ट के मुताबिक 1383.78 करोड़ के प्रोजेक्ट में दो लेन की बाय-डायरेक्शन टनल, इसके ऑपरेशन और मेंटेनेंस के अलावा संपर्क मार्ग और एस्केप पैसेज (बाहर निकलने के रास्ते) का निर्माण शामिल था। एनएचआईडीसीएल ने शॉर्टलिस्टेड 10 कंस्ट्रक्शन कंपनियों में से एनईसीएल (नवयुगा इंजीनियरिंग कंपनी लिमिटेड) को 853.79 करोड़ में ठेका ईपीसी मोड में दिया। फिर एनईसीएल ने तीन अन्य कंपनियों श्री साई कंस्ट्रक्शन, नव दुर्गा और पीबी चड्ढा के जरिए मजदूरों को अनुबंधित किया।

तय हुआ कि टनल, एस्केप पैसेज और अप्रोच रोड आठ जुलाई 2022 तक बन जाएंगे। इसका काम जुलाई 2018 में शुरू हुआ, लेकिन अब तक सिर्फ 56% ही काम हो पाया। अब इसकी डेडलाइन मई 2024 है। रेस्क्यू पैसेज तो टनल में है ही नहीं।

जब कंपनी से सवाल किया तो कहा गया कि टनल में इसकी जरूरत नहीं थी, क्योंकि दोनों लेन के बीच दीवार में इमरजेंसी एग्जिट गेट का प्रावधान है। इससे आपात स्थिति में एक से दूसरी तरफ मूवमेंट होगा। हकीकत ये है कि सुरंग में कहीं भी एग्जिट गेट अब तक नहीं हैं।

सुरंग के खोदे गए हिस्से में सुरक्षा (ह्यूम) पाइप नहीं डाले गए। इस प्रोजेक्ट के लिए एनएचआईडीसीएल के महाप्रबंधक के रूप में काम कर रहे कर्नल दीपक पाटिल ने बताया कि कमजोर स्थानों पर ह्यूम पाइप का उपयोग करने की योजना थी, लेकिन किसी को भी एहसास नहीं था कि इस पैमाने पर कुछ हो सकता है।

10 और 11 नवंबर को भी मलबा गिर रहा था, जिसे जेसीबी मशीन से एक लोडर में भरा गया। उस वक्त भी कंपनी ने इसे गंभीरता से नहीं लिया।मलबा गिरने के बाद आपदा की प्रारंभिक प्रतिक्रिया में भी देरी हुई। फंसे हुए मजदूरों और बचाव टीमों के बीच बातचीत का कोई भी चैनल नहीं था। जबकि सुरक्षा के लिहाज से ये जरूरी था।कंपनी के पास ऐसी चुनौती से निपटने के लिए एक भी विशेष मशीन नहीं थी, न ही उसने किसी दूसरी कंपनी से इसे लेकर करार किया था।कुछ टनल विशेषज्ञों ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि सिल्क्यारा सुरंग की खुदाई के दौरान भी गलती हुई। इस वजह से उसके अंतिम आकार और सपोर्ट के लिए सेकंड लेयर के दौरान पुनः प्रोफाइलिंग करनी पड़ी। लाइनिंग के दौरान रीप्रोफाइलिंग भी बेतरतीब तरीके से की गई।

जांच कमेटी भी सवालों में...

हादसे की जांच समिति का नेतृत्व निदेशक, भूस्खलन शमन और प्रबंधन केंद्र (एलएमएमसी) उत्तराखंड कर रहे हैं। एलएमएमसी नया स्वायत्त निकाय है। इनमें कोई भू-वैज्ञानिक नहीं है। सिर्फ इंजीनियर हैं। 6 सदस्यीय समिति में श्रमिक संघ या स्वतंत्र विशेषज्ञ भी नहीं है।

पीएम मोदी का चेहरा, दिग्गजों को लड़वाया चुनाव... 2024 से पहले भाजपा की इस जीत के क्या मायने

पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव के नतीजों का पूरे देश को इंतजार था। सुपर संडे को चार राज्यों का रिजल्ट आ गया। मिजोरम के नतीजे सोमवार को आएंगे। भारतीय जनता पार्टी ने 3-1 से बाजी मार ली। उसने न केवल शानदार बैटिंग और बॉलिंग की। अलबत्ता, फील्डिंग सेट करने में भी निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस को कोसों पीछे छोड़ दिया। उसने अपनी 'पिच' पर मैच तो जीता ही, कांग्रेस के मैदान में घुसकर उसे ढेर कर दिया। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में बीजेपी को स्पष्ट जनादेश मिला है। जनता ने बीजेपी को चुनने में 'इफ एंड बट' की गुंजाइश नहीं छोड़ी। ये चुनाव कई मायनों में बहुत अहम थे। इन्हें अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले 'सेमीफाइनल' बताया जा रहा था। इस सेमीफाइनल में बीजेपी ने पीएम मोदी को चेहरा बनाया था। यानी उसने किसी भी राज्य में पहले से सीएम के चेहरे का ऐलान नहीं किया था। यहां तक पार्टी ने अपने कई केंद्रीय मंत्रियों को विधानसभा चुनाव में उतार दिया था। इसमें बहुत बड़ा रिस्क था। लेकिन, जोखिम लेना बीजेपी के पक्ष में साबित हुआ। 2024 से पहले इस जीत के काफी ज्यादा मायने हैं। आइए, यहां समझने की कोशिश करते हैं कैसे?

बना हुआ है पीएम मोदी का मैजिक

पीएम मोदी ने दोबारा दिखाया है कि उनका मैजिक बना हुआ है। पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में बीजेपी पीएम मोदी के चेहरे के साथ उतरी थी। उसने सीएम का कैंडिडेट पहले से नहीं घोषित किया था। चुनावी नतीजे आने के बाद लगता है कि ऐसा करना बीजेपी के लिए फायदेमंद साबित हुआ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी पर लोगों ने भरोसा जताया। चुनाव के दौरान भी बीजेपी किसी हवा-हवाई वादे करने से बची। अलबत्ता, वह अपने एजेंडे को समझाने में

भी कामयाब साबित हुई। लोकसभा चुनाव के लिहाज से यह काफी महत्वपूर्ण है। विपक्ष और मोदी विरोधी बीते कुछ समय से इस बात का दावा करने लगे थे कि पीएम मोदी का अब वैसा मैजिक नहीं रह गया है जो 2014 के समय था। यह उन सभी को करारा जवाब है। लोगों ने इन राज्यों में सिर्फ और सिर्फ मोदी के नाम पर वोट दिया है। यानी यह किसी और से ज्यादा पीएम मोदी की जीत है।

मंडल 2.0 को लोगों ने किया खारिज

कांग्रेस ने इन चुनावों में जाति जनगणना को बड़ा मुद्दा बनाकर पेश किया था। लेकिन, प्रधानमंत्री ने 'नई' जातियों बनाकर और बताकर विरोधी दल के इस हथियार को कुंद कर दिया। पीएम ने दो-टूक इन चार जातियों को फोकस में रखने का प्लान जाहिर कर दिया। इन जातियों में महिलाएं, किसान, गरीब और युवा शामिल हैं। इस तरह विधानसभा चुनावों ने यह भी दिखा दिया कि मंडल 2.0 को मुद्दा बनाकर अब चुनाव नहीं जीता जा सकता है। नब्बे का दौर कुछ और था। अब कुछ और। ऐसे में अगले साल लोकसभा चुनाव में विरोधी दलों को इसके आगे का कुछ सोचना होगा। पीएम ने एकसाथ देश के सबसे बड़े वर्ग की समस्या को एड्रेस करने की बात कह दी है।

दिग्गजों को चुनाव लड़ाकर बीजेपी ने दिया मैसेज

बीजेपी ने विधानसभा चुनावों में मंत्रियों और सांसदों को विधानसभा चुनाव में उतार दिया। इसी से समझा जा सकता है कि वह इन चुनावों को कितनी गंभीरता से ले रही थी। उसका यह दांव सफल भी साबित हुआ। इन दिग्गजों का न केवल अपने क्षेत्र में बल्कि आसपास के क्षेत्रों में भी प्रभाव होता है। यह प्रभाव विधानसभा चुनाव में ज्यादा सीटों को जीतने में मदद करता है। इसके जरिये बीजेपी ने अपने प्रबंधन कौशल के बारे में भी दिखा दिया। उसने साफ मैसेज दिया कि जरूरत पड़ने पर न कोई मंत्री और न कोई सांसद। जहां जिसकी जरूरत होगी, उसकी सेवाएं ली जाएंगी। बीजेपी के नेताओं में भी यह संस्कृति जज्ब कर गई है। वे किसी भी मैदान में उतरने के लिए तैयार रहते हैं। लोकसभा चुनाव से पहले इसने 'टीम बीजेपी' की बड़ी मजबूती को उजागर किया है।

पीएम को चेहरा बनाने में रिस्क लेने से नहीं डरी

बीजेपी ने यह चुनाव पीएम मोदी को चेहरा बनाकर लड़ा। 2024 लोकसभा चुनाव से पहले यह बहुत बड़ा रिस्क था। चुनाव परिणाम बीजेपी की अपेक्षा के उलट आते तो यह पीएम की छवि पर बड़े सवाल खड़े कर सकता था। लेकिन, बीजेपी वह जोखिम लेने से कतराई नहीं। छत्तीसगढ़ में जहां तकरीबन सभी एग्जिट पोल ने कांग्रेस की जीत के अनुमान जाहिर किए थे, वहां भी बीजेपी ने बाजी पलट दी। शहरी इलाकों के साथ बीजेपी ने आदिवासी बहुल इलाकों में भी जबर्दस्त प्रदर्शन किया।

साप्ताहिक समय माया

भारतीय रसोइयों में रखें मसाले बीमारी को नियंत्रित करने में सक्षम

(पेज 1 का शेष)

हल्दी

हल्दी में करक्यूमिन (Curcumin) नाम का एक पावरफुल एंटी-इन्फ्लेमेटरी और एंटीऑक्सीडेंट होता है, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और कई तरह के इंफेक्शन से भी बचाव करता है। भारतीय भोजन को बनाने में हल्दी का खूब उपयोग होता है।

सर्दी और खांसी से बचाव के लिए हल्दी का उपयोग

सर्दी और खांसी से बचाव के लिए एंटी-वायरल और एंटी-फंगल गुणों से भरपूर हल्दी की आप रात के समय एक स्पेशल ड्रिंक बनाकर पी सकते हैं। इस ड्रिंक को बनाने के लिए आपको 1 कप गर्म दूध लेना होगा, इस दूध में 1 चौथाई चम्मच हल्दी और 1 चुटकी काली मिर्च का पाउडर मिलाएं और फिर इस गर्म दूध को पिएं।

गले में खराश और सर्दी-खांसी की समस्या से बचाव के लिए आप 1 कप पानी में 1 इंच अदरक का टुकड़ा कद्दूकस करके डालें और फिर इसे एक उबाल आने तक गैस पर पकाएं। इसके बाद पानी को कप में छान लें और फिर इसमें आधा चम्मच शहद मिलाकर पिएं। इस अदरक वाली चाय को पीने से आपको आराम मिलेगा और आप बेहतर महसूस करेंगे।

सावधानियां:

अदरक और हल्दी का सेवन सुरक्षित होता है लेकिन अगर आप किसी एलर्जी या गंभीर बीमारी से पीड़ित हैं तो इन उपायों को फॉलों करने से पहले चिकित्सक से परामर्श करें।

सर्दियों में जरूर पिएं ये 5 तरह के काढ़ा, खांसी-जुकाम और पाचन का हैं रामबाण इलाज

Kadha Recipe बदलते मौसम में सर्दी-खांसी और जुकाम की समस्या आम है। इससे गले में दर्द और फ्लू की परेशानी भी बढ़ जाती है। इसके अलावा कुछ लोगों को मौसम में बदलाव की वजह से पाचन की समस्या भी होती है। इन मौसमी बीमारियों से राहत पाने के लिए काढ़ा एक आयुर्वेदिक उपचार है।

1. इसे बनाने के लिए नेचुरल चीजों का इस्तेमाल करते हैं।

2. यह मौसमी बीमारियों से बचाने में मददगार है।

खाने के शौकीन लोगों का सर्दियों के मौसम का बेसब्री से इंतजार रहता है, लेकिन इस मौसम में लोग अक्सर सर्दी-खांसी और जुकाम की समस्या से परेशान रहते हैं। इसके अलावा सर्दियों में पाचन की भी समस्या होती है। आप इससे राहत पाने के लिए घरेलू उपचार की मदद ले सकते हैं।

काढ़ा एक आयुर्वेदिक उपचार है, जो आपको मौसमी संक्रमण से लड़ने में भी मदद कर सकता है। भारतीय घरों में आसानी से पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के साबुत मसालों और किचन में इस्तेमाल किए जाने वाले तरह-तरह की सामग्रियों से काढ़ा तैयार कर सकते हैं। यह सेहत के लिए शानदार विकल्प है, तो आइए जानते हैं कौन-से काढ़ा आपके लिए फायदेमंद साबित हो सकते हैं।

तुलसी का काढ़ा

एक पैन में पानी उबालें। अब इसमें तुलसी के पत्ते, 1 छोटा चम्मच काली मिर्च , 1 छोटा चम्मच दालचीनी पाउडर और 1 छोटा चम्मच कसा हुआ अदरक डालें। इस मिश्रण को अच्छी तरह मिलाएं। इसे 10-15 मिनट तक उबलने दें । इसके बाद इसे छान लें। जब यह ठंडा हो जाए, तो इसे पिएं। यह इम्युनिटी बूस्टर के रूप में काम करता है। जिससे सर्दी-जुकाम और खांसी से बच सकते हैं। इसके अलावा यह काढ़ा पाचन के लिए भी फायदेमंद है।

गिलोय काढ़ा

इस काढ़ा को बनाने के लिए 1 चम्मच गिलोय गुडूची को पीस लें। इसके बाद इसे पानी में मिक्स करें और इसे उबालें। यह काढ़ा फ्लू से लड़ने में आपकी मदद करता है।

दालचीनी का काढ़ा

इस काढ़ा को बनाना काफी आसान है, इसे बनाने के लिए एक पैन में एक- दो कप पानी डालें। अब इसमें दालचीनी पाउडर मिलाएं। इस मिश्रण को अच्छी तरह उबालें। चाहें तो आप इसमें एक चम्मच शहद भी मिक्स कर सकते हैं। यह शरीर की ताकत बढ़ाने के साथ आपको मौसमी बीमारियों से बचाने में मदद करता है।

अजवाइन का काढ़ा

अजवाइन में औषधीय गुण होते हैं, जो शरीर को कई बीमारियों से बचाने में मदद करते हैं। इसमें कार्बोहाइड्रेट, वसा, प्रोटीन, फाइबर, आयोडीन, मैंगनीज जैसे तमाम पोषक तत्व पाए जाते हैं। कई लोग अजवाइन को गर्म पानी के साथ खाते हैं, इसके अलावा आप अजवाइन का काढ़ा भी बना सकते हैं, इसके लिए एक पैन में पानी और दो चम्मच अजवाइन डालें। इस मिश्रण को उबाल लें। इसे पीने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और पाचन के लिए भी फायदेमंद है।

तुलसी और काली मिर्च का काढ़ा

सर्दियों में कमजोर इम्युनिटी के कारण लोग अक्सर सर्दी-खांसी की समस्या से परेशान रहते हैं। इस मौसम में संक्रमण से लड़ने के लिए आप रोजाना तुलसी का काढ़ा पी सकते हैं। इसे बनाने के लिए एक पैन में पानी गर्म करें, इसमें तुलसी के पत्ते, दालचीनी, काली मिर्च और सूखी अदरक मिलाएं। इस मिश्रण को कुछ देर तक उबाल लें, फिर इसे छान लें। जब गुनगुना हो जाए, तो इसे पिएं।

सर्दी में होने वाली बीमारियाँ: प्रकार, कारण, लक्षण और बचाव

सर्दी आ गई है और यह रोमांचक मिलन समारोहों, थैंक्सगिविंग, छुट्टियों की पार्टियों और पारिवारिक रात्रिभोज के साथ काफी व्यस्त समय है। हालाँकि, जैसा कि हम आकर्षक सर्दियों के लिए तैयार हो रहे हैं, यह भी महत्वपूर्ण है कि हम मौसम के अप्रिय पक्ष को न भूलें, जैसे कि तापमान में गिरावट और अन्य संबंधित कारक जो कई स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकते हैं, जिन्हें कई स्वास्थ्य समस्याएं भी कहा जाता है। सर्दी की बीमारियाँ या मौसमी बीमारियाँ।

सर्दी में होने वाली बीमारियों के प्रकार

बदलते मौसम के साथ लोग बीमार हो जाते हैं क्योंकि तापमान में बदलाव के कारण वायरस पनपते हैं जो फिर बीमारियाँ फैलाते हैं। सर्दियों के मौसम में बीमारियाँ अचानक प्रकट हो सकती हैं और आपको सुस्ती और सुस्ती का एहसास करा सकती हैं। उदाहरण के लिए, आपको गले में खराश हो सकती है जो बाद में गंभीर संक्रमण में बदल सकती है जिससे भोजन या पानी निगलने में काफी दर्द होता है। इसके अलावा, ठंड के मौसम के कारण आपका शरीर ठंडा हो जाता है और साधारण बीमारियों को भी ठीक करना मुश्किल हो जाता है।

इसलिए, सर्दियों में एहतियाती कदम उठाने और मौसमी बीमारियों से बचने की सलाह दी जाती है । यहां सर्दियों में होने वाली बीमारियों और उनकी सफल रोकथाम और उपचार के तरीकों की सूची दी गई है।

सामान्य जुकाम

आम सर्दी को अक्सर ठंडे महीनों का एक अभिन्न अंग माना जाता है क्योंकि यह उस दौरान व्यापक रूप से फैलती है। इसका कारण यह है कि शुष्क और ठंडी जलवायु राइनोवायरस को पनपने और पनपने के लिए अनुकूलतम परिस्थितियाँ प्रदान करती है।

हालाँकि सामान्य सर्दी कष्टप्रद हो सकती है, फिर भी आप अपनी सामान्य गतिविधियाँ जारी रख सकते हैं और दो से चार दिनों में सर्दी कम हो जाएगी। यदि यह उससे अधिक समय तक रहता है, तो चिकित्सा सहायता प्राप्त करना आवश्यक है।

लक्षण: सामान्य सर्दी के लक्षण आमतौर पर राइनोवायरस के संपर्क में आने के एक से तीन दिनों के भीतर दिखाई देते हैं। उनमें से कुछ में नाक बहना, कंजेशन, गले में खराश, खांसी, छींक आना, हल्का सिरदर्द और शरीर में दर्द, अस्वस्थता और निम्न श्रेणी का बुखार शामिल हैं।

रोकथाम: वायरस को फैलने से रोकना आम सर्दी से बचाव का सबसे अच्छा तरीका है। बार-बार हाथ धोना और सर्दी से पीड़ित लोगों के संपर्क से बचना महत्वपूर्ण है। यदि परिवार का कोई सदस्य बीमार है, तो बर्तन साझा करने से बचें और घर के अंदर लाइट स्विच और काउंटरटॉप जैसी सतहों को साफ करने के लिए कीटाणुनाशक का उपयोग करें।

उपचार: चूंकि सामान्य सर्दी का कोई इलाज नहीं है, इसलिए डिकॉन्गेस्टेंट लेने और उचित आराम करने की सलाह दी जाती है। एंटीबायोटिक्स सर्दी के वायरस के खिलाफ काम नहीं करते हैं और जब तक कोई जीवाणु संक्रमण न हो तब तक उनकी सिफारिश नहीं की जाती है।

न्यूमोनिया

निमोनिया एक जानलेवा बीमारी है जिसमें वायरल और बैक्टीरियल संक्रमण (आमतौर पर स्ट्रेप्टोकोकस या न्यूमोकोकस बैक्टीरिया) एल्वियोली या फेफड़ों की छोटी-छोटी थैलियों में फैल जाते हैं और उनमें तरल पदार्थ भर जाते हैं। इसलिए, निमोनिया से पीड़ित व्यक्तियों में सांस लेने में तकलीफ होती है। निमोनिया का कारण बनने वाले रोगाणु खांसने, छींकने या संक्रमित वस्तुओं को छूने और फिर मुंह या नाक को छूने से फैल सकते हैं।

लक्षण: निमोनिया से जुड़े कुछ लक्षणों में हरे कफ के साथ गंभीर खांसी, ठंड और सिरदर्द के साथ तेज बुखार, सांस लेने में तकलीफ, दस्त, त्वचा का बैंगनी रंग, उल्टी, पसीना और मांसपेशियों में दर्द शामिल हैं।

रोकथाम: बैक्टीरियल निमोनिया की रोकथाम के लिए पीसीवी 13 (प्रिवनार 13) और पीपीएसवी23 (न्यूमोवैक्स) शॉट दिए जा सकते हैं। इसके अलावा, आप सामान्य स्वास्थ्य और स्वच्छता मानकों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, जैसे कि बैक्टीरियल निमोनिया होने के जोखिम को कम करने के लिए उचित व्यायाम, आराम और आहार लेना।

उपचार: उपचार का सबसे सामान्य रूप एंटीबायोटिक्स लेना है। निर्धारित खुराक को पूरा करना महत्वपूर्ण है अन्यथा आप फिर से बीमार हो सकते हैं। गंभीर या जिद्दी निमोनिया के मामलों में, ऑक्सीजन उपचार, आईवी तरल पदार्थ और दवाएं दी जाती हैं।

कान का तीव्र संक्रमण

तीव्र कान संक्रमण सर्दियों की एक आम बीमारी है जिसमें स्ट्रेप्टोकोकस न्यूमोनिया और हेमोफिलस इन्फ्लुएंजा जैसे बैक्टीरिया मध्य कान में सूजन और तरल पदार्थ का निर्माण करते हैं। तीव्र कान संक्रमण के अन्य कारण ठंड, धूम्रपान, साइनस संक्रमण और जलवायु परिस्थितियों में बदलाव हैं।

लक्षण: तीव्र कान संक्रमण के लक्षण गंभीर दर्द, सुनने की हानि , कान में असुविधा आदि हैं।

रोकथाम: नीचे दिए गए चरणों का पालन करके किसी भी प्रकार के कान के संक्रमण को रोका जा सकता है।

- *समय-समय पर कानों को धोकर या रुई के फाहे से साफ करना जरूरी है।*
- *स्नान या तैराकी के बाद अपने कानों को पूरी तरह से सुखाना सुनिश्चित करें।*
- *धूम्रपान से बचें।*
- *सुनिश्चित करें कि आपके टीके अद्यतित हैं।*
- *दवाओं के माध्यम से एलर्जी का प्रबंधन करें।*
- *सामान्य स्वच्छता बनाए रखें।*

उपचार: आमतौर पर, एंटीबायोटिक्स निर्धारित की जाती हैं यदि ठंड के मौसम के कारण होने वाली बीमारियाँ बैक्टीरिया के कारण होती हैं न कि वायरस के कारण। यदि कान का संक्रमण दर्द के साथ है, तो आपका डॉक्टर एसिटामिनोफेन (टाइलेनॉल) या इबुप्रोफेन (एडविल, मोटरीन) जैसे दर्द निवारक दवाओं की सिफारिश कर सकता है।

नोरोवायरस

नोरोवायरस एक संक्रामक बीमारी है जो सभी उम्र के लोगों और वर्ष के किसी भी समय हो सकती है। हालाँकि, यह सर्दियों में अधिक आम है।

यह वायरस दस्त और उल्टी का कारण बनता है और इसलिए इसे शीतकालीन उल्टी बग कहा जाता है।

लक्षण: नोरोवायरस संक्रमण के सामान्य लक्षण मतली, उल्टी, दस्त, पेट दर्द, बुखार और ठंड लगना हैं।

रोकथाम: ऐसे कोई टीके नहीं हैं जो वायरस को रोक सकें, लेकिन आप इससे बच सकते हैं -

- उचित हाथ और मौखिक स्वच्छता का पालन करना।
- अच्छी तरह पका हुआ भोजन करना।
- घर में सतहों की सफाई और कीटाणुरहित करना।

उपचार: नोरोवायरस संक्रमण बिना किसी उपचार के कुछ ही दिनों में ठीक हो सकता है। हालाँकि, आपका डॉक्टर ओवर-द-काउंटर एंटी-डायरिया दवा लिख सकता है।

गले का संक्रमण

ग्रुप ए स्ट्रेप्टोकोकस बैक्टीरिया के कारण होने वाला स्ट्रेप थ्रोट, गले और टॉन्सिल में होने वाला एक गंभीर संक्रमण है। यह पांच से पंद्रह वर्ष की आयु के बच्चों में ठंड के मौसम के कारण होने वाली एक आम बीमारी है। इस संक्रमण से बचाव के लिए सर्दियों में बच्चों की देखभाल महत्वपूर्ण है।

लक्षण: गले में तेज दर्द स्पष्ट लक्षण है जो स्ट्रेप गले वाले व्यक्ति को अनुभव होगा। अन्य लक्षणों में बुखार, सिरदर्द, मतली, सूजी हुई लिम्फ नोड्स और उल्टी शामिल हैं।

रोकथाम: स्ट्रेप थ्रोट से बचाव के लिए आप निम्नलिखित टिप्स आज़मा सकते हैं।

- *इस मौसम में अधिक गर्म तरल पदार्थ पियें।*
- *हाइड्रेटेड रहना।*
- *अपने हाथ बार-बार धोएं।*
- *जब आपको गले में हल्का सा दर्द महसूस हो तो गरारे करें।*
- *उचित आराम करें।*

इलाज

गले की खराश के विपरीत जो इलाज के बिना ठीक हो सकती है, स्ट्रेप गले के इलाज के लिए मौखिक एंटीबायोटिक्स निर्धारित की जाती हैं। दर्द और बुखार को कम करने के लिए इबुप्रोफेन (एडविल, मोटरीन आईबी) या एसिटामिनोफेन (टाइलेनॉल) की सिफारिश की जा सकती है।

सर्दियों के दौरान किसी बीमारी से कैसे सुरक्षित रहें

सर्दियों के दौरान ठंडा मौसम और छोटे दिन आपको व्यायाम करने और स्वस्थ और फिट रहने की प्रेरणा खो सकते हैं। इससे प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर हो सकती है जिससे बीमारियों के फैलने का खतरा बढ़ सकता है। उपचार के विकल्पों पर जाने से बेहतर है कि उन्हें होने से रोका जाए और ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका पहले से योजना बनाना और सावधान रहना है। ठंड के मौसम में होने वाली बीमारियों से सुरक्षित रहने में आपकी मदद के लिए यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं ।

अपने हाथ बार-बार धोएं: यह बीमारी से बचाव का सबसे आम उपाय होने के साथ-साथ सबसे ज्यादा नजरअंदाज किया जाने वाला उपाय भी है। अपने हाथों को बार-बार धोने की आदत बनाने से यह सुनिश्चित होता है कि आप अपने हाथों से रोग पैदा करने वाले कीटाणुओं से छुटकारा पा रहे हैं और इसे फैलने से भी रोकते हैं।

अपने आहार में विटामिन सी शामिल करें: विटामिन सी शरीर को सर्दी, फ्लू और अन्य सामान्य सर्दियों की बीमारियों के लक्षणों से लड़ने में मदद करता है । इसके अलावा, फ्लू से बचने के लिए सर्दियों के लिए सर्वोत्तम खाद्य पदार्थों को अपने आहार में शामिल करने पर विचार करें ।

हर्बल चाय पियें: कैमोमाइल जैसी हर्बल चाय पीने से आपके शरीर को आराम मिल सकता है और आपको बेहतर आराम करने में मदद मिल सकती है।

ध्यान का अभ्यास करें: ध्यान आपको सर्दी की उदासी, चिंता और तनाव से दूर रखने में मदद करता है। यदि आपकी चिंता और तनाव का स्तर कम है तो आपका शरीर संक्रमणों से बेहतर ढंग से लड़ सकता है।

सर्दियों के दौरान सामान्य शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए समग्र दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। स्वस्थ आदतों और सुरक्षा प्रथाओं का पालन करने से आपको बीमार होने की संभावना कम करने में मदद मिलेगी ताकि आप एक स्वस्थ और खुशहाल छुट्टियों के मौसम का आनंद उठा सकें।

चीन में बचपन में निमोनिया की रहस्यमय लहर के पीछे क्या है?

वैज्ञानिकों को श्वसन रोग में वृद्धि की उम्मीद थी, लेकिन चीन में जो हो रहा है वह असामान्य है।

चीन के चोंगकिंग में माता-पिता अपने बच्चों की श्वसन संबंधी बीमारी के इलाज के लिए इंतजार कर रहे हैं। चीन बच्चों में निमोनिया सहित श्वसन संबंधी बीमारियों में वृद्धि से जूझ रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने पिछले हफ्ते कहा था कि अस्पताल में भर्ती होने की संख्या में बढ़ोतरी के पीछे किसी नए रोगज़नक़ के बजाय सामान्य शीतकालीन संक्रमण हैं। इस सर्दी में देश में संक्रमण बढ़ने की आशंका थी, 2020 में महामारी शुरू होने के बाद से चीन में यह पहली बार बिना किसी प्रतिबंध के है। महामारी विज्ञानियों का कहना है कि चीन में निमोनिया का उच्च प्रसार असामान्य है। जब अन्य देशों में COVID-19 प्रतिबंधों में ढील दी गई, तो इन्फ्लूएंजा और रेस्पिरेटरी सिंकाइटियल वायरस (RSV) के कारण बीमारी में सबसे अधिक वृद्धि हुई।

विश्व घातक संगठन ने पिछले सप्ताह चीन के स्वास्थ्य अधिकारियों से प्रयोगशाला के परिणामों और श्वसन संबंधी बीमारियों के प्रसार के हालिया रुझानों पर डेटा सहित जानकारी का अनुरोध किया था। इसके बाद मीडिया और उभरते रोगों की निगरानी के लिए कार्यक्रम - इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर इंफेक्शियस डिजीज द्वारा संचालित एक सार्वजनिक रूप से उपलब्ध प्रणाली - 'अनियंत्रित निमोनिया' के समूहों के बारे में रिपोर्ट आई।

23 नवंबर के एक बयान में, डब्ल्यूएचओ ने कहा कि चीन के स्वास्थ्य अधिकारियों ने अक्टूबर के बाद से अस्पताल में भर्ती होने की संख्या में वृद्धि के लिए एडेनोवायरस, इन्फ्लूएंजा वायरस और आरएसवी जैसे ज्ञात रोगजनकों को जिम्मेदार ठहराया है, जो केवल हल्के, सर्दी जैसे लक्षणों का कारण बनते हैं। हालाँकि, मई के बाद से, विशेष रूप से बीजिंग जैसे उत्तरी शहरों में, अस्पताल में भर्ती होने वाले बच्चों की संख्या में वृद्धि मुख्य रूप से माइकोप्लाज्मा निमोनिया के कारण होती है, जो एक जीवाणु है जो फेफड़ों को संक्रमित करता है। यह 'वॉकिंग निमोनिया' का एक सामान्य कारण है, यह बीमारी का एक रूप है जो आमतौर पर अपेक्षाकृत हल्का होता है और इसमें बिस्तर पर आराम या अस्पताल में भर्ती होने की आवश्यकता नहीं होती है, लेकिन इस साल यह बच्चों को बुरी तरह प्रभावित कर रहा है।

हांगकांग विश्वविद्यालय के महामारी विशेषज्ञ बेंजामिन काउलिंग बीमारी की लहर से आश्चर्यचकित नहीं हैं। 'यह तीव्र श्वसन संक्रमणों में एक विशिष्ट 'शीतकालीन उछाल' है,' वे कहते हैं। 'यह इस साल थोड़ा पहले हो रहा है, शायद तीन साल के सीओवीआईडी उपायों के परिणामस्वरूप श्वसन संक्रमण के लिए जनसंख्या की बढ़ती संवेदनशीलता के कारण।'

एक परिचित पैटर्न

महामारी संबंधी उपायों - जैसे मास्क पहनना और यात्रा प्रतिबंध - में ढील के बाद पहली सर्दियों के दौरान सामान्य श्वसन रोगों में फिर से उछाल आना अन्य देशों में एक परिचित पैटर्न रहा है। नवंबर 2022 में, संयुक्त राज्य अमेरिका में फ्लू से अस्पताल में भर्ती होने वाले लोगों की संख्या 2010 के बाद से वर्ष के उस समय में सबसे अधिक थी।

विश्वविद्यालय के कम्प्यूटेशनल जीवविज्ञानी फ्रेंकोइस बैलौक्स ने कहा, राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन और सीओवीआईडी -19 के प्रसार को धीमा करने के लिए लागू किए गए अन्य उपायों ने मौसमी रोगजनकों को फैलने से रोक दिया, जिससे लोगों को इन सूक्ष्मजीवों के खिलाफ प्रतिरक्षा बनाने का कम अवसर मिला, एक घटना जिसे 'प्रतिरक्षा ऋण' के रूप में जाना जाता है। कॉलेज लंदन ने यूके साइंस मीडिया सेंटर को दिए एक बयान में कहा। बैलौक्स ने कहा, 'चूंकि चीन ने पृथ्वी पर किसी भी अन्य देश की तुलना में कहीं अधिक लंबे और कठोर लॉकडाउन का अनुभव किया है, इसलिए यह अनुमान लगाया गया था कि 'लॉकडाउन निकास' की लहरें चीन में पर्याप्त हो सकती हैं।'

हालाँकि, बीमारी की चीनी लहर अन्य देशों में देखी गई लहर से भिन्न है। कुछ राष्ट्र अपने पोस्ट-कोविड शीतकालीन उछाल के दौरान फ्लू और आरएसवी संक्रमण से जूझ रहे थे, लेकिन चीन में, एम. निमोनिया संक्रमण आम रहा है। काउलिंग कहते हैं, यह आश्चर्य की बात है क्योंकि जीवाणु संक्रमण अक्सर अवसरवादी होते हैं और वायरल संक्रमण के बाद जोर पकड़ते हैं।

हालाँकि जीवाणु के कारण होने वाले निमोनिया का इलाज आमतौर पर मैक्रोलाइड्स नामक एंटीबायोटिक दवाओं से किया जाता है, लेकिन इन दवाओं पर अत्यधिक निर्भरता के कारण रोगज़नक़ में प्रतिरोध विकसित हो गया है। अध्ययनों से पता चलता है कि बीजिंग में मैक्रोलाइड्स के प्रति एम. निमोनिया की प्रतिरोध दर 70% से 90% के बीच है। काउलिंग का कहना है कि यह प्रतिरोध इस वर्ष एम. निमोनिया के कारण अस्पताल में भर्ती होने के उच्च स्तर में योगदान दे सकता है, क्योंकि यह उपचार में बाधा उत्पन्न कर सकता है और बैक्टीरियल निमोनिया संक्रमण से रिकवरी को धीमा कर सकता है।

ऑस्ट्रेलिया में यूएनएसडब्ल्यू सिडनी में श्वसन चिकित्सक क्रिस्टीन जेनकिंस का कहना है कि सर्दियों में सर्दी में वृद्धि हमेशा एक चुनौती होती है, लेकिन चीन में स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियां महामारी से पहले की तुलना में अब उन्हें कम करने के लिए बेहतर स्थिति में हैं। वह कहती हैं कि बेहतर राष्ट्रीय रोग-निगरानी प्रणालियाँ, नैदानिक परीक्षण और संचरण को रोकने और मौतों को रोकने के उपाय अब मौजूद हैं।

जेनकिंस कहते हैं कि भले ही संक्रमण ज्ञात रोगजनकों के कारण होता है, बीमारी के गंभीर प्रकोप के जोखिम को कम करने के लिए उन्हें बारीकी से ट्रैक करना महत्वपूर्ण है। वह कहती हैं, ''हम (कोविड-19 से) बहुत अलग स्थिति में हैं, लेकिन मुझे नहीं लगता कि हम लापरवाह हो सकते हैं।''

कोयले के आयात पर अडानी की कथित अनियमितताएँ फिर सवालों के घेरे में

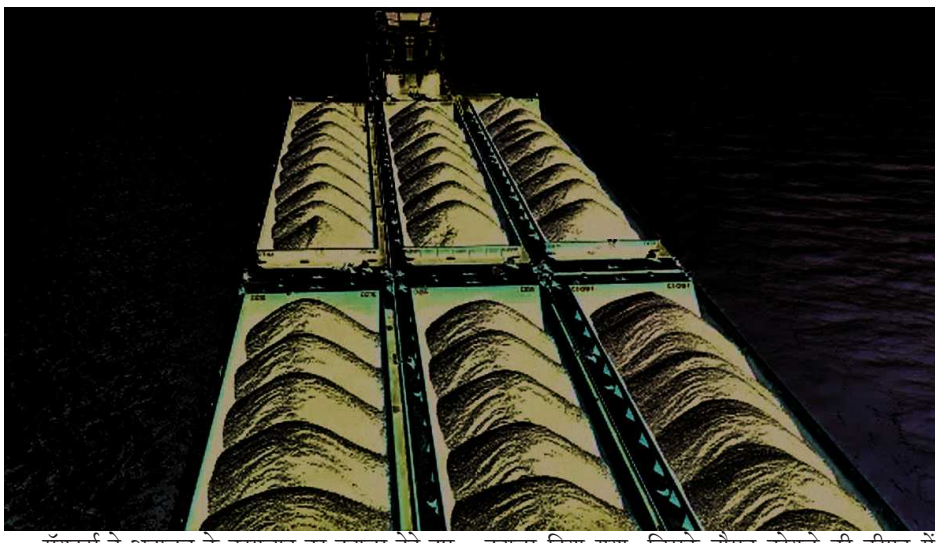

रॉयटर्स ने अदालत के कागजात का हवाला देते हुए रिपोर्ट दी है कि अदानी एंटरप्राइजेज और उसकी सहायक कंपनियों ने 'दस्तावेजों की रिलीज को रोकने के लिए भारत और सिंगापुर में बार-बार कानूनी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया है', उन दस्तावेजों का जिक्र किया गया है जो अदानी के कोयला आयात की वास्तविक प्रकृति और मूल्य का विवरण देंगे। भारत को।

जनवरी में हिंडनबर्ग रिसर्च रिपोर्ट में कोयला आयात में कथित अनियमितताओं का जिक्र होने के बाद से अदानी समूह सवालों के घेरे में है और एक बार फिर से निशाने पर है। लंदन स्थित फाइनेंशियल टाइम्स द्वारा एक विस्तृत जांच, पिछले महीने 'कोयला आयात के कथित अधिक मूल्यांकन के लिए', ईंधन की बढ़ी हुई कीमतों और बिजली उपभोक्ताओं के लिए बढ़ी हुई दरों के लिए कोयला आयात के कथित अधिक मूल्यांकन से जुड़ा हो सकता है।

9 अक्टूबर की कानूनी फाइलिंग में, जिसे रॉयटर्स ने शुक्रवार (17 नवंबर) को रिपोर्ट किया है, भारत की राजस्व खुफिया एजेंसी, राजस्व खुफिया निदेशालय ने 'भारत के सुप्रीम कोर्ट से पिछले निचली अदालत के आदेश को रद्द करने के लिए कहा है, जिसने अडानी को अधिकारियों को इकट्ठा करने से रोकने की अनुमति दी थी।' सिंगापुर से साक्ष्य।' समाचार एजेंसी के अनुसार, डीआरआई का कहना है, 'कंपनी ने डअधिकारियों के साथ दस्तावेज़ साझा करने के कदम को.वर्षों तक विफल रखा है।' अडानी ने गलत काम करने से इनकार किया है, और रॉयटर्स को बताया कि उसने चार साल से अधिक समय पहले मांगे गए विवरण और दस्तावेज़ प्रदान करके अधिकारियों के साथ 'पूरा सहयोग' किया था और उसके बाद जांचकर्ताओं द्वारा 'कोई कमी या आपत्ति' नहीं बताई गई थी।

रॉयटर्स का कहना है कि भारत के 2024 चुनाव से पहले, राजनीतिक विरोधियों ने सरकारी फैसलों में अदानी के प्रति पक्षपात का आरोप लगाते हुए प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के प्रशासन पर दबाव बढ़ा दिया है।

रॉयटर्स लिखता है, 'मोदी और अडानी, जो दोनों गुजरात से हैं, ने अनुचित व्यवहार से इनकार किया है।'

आयात का अधिक चालान करना, उपभोक्ता बिजली के लिए अधिक भुगतान कर रहे हैं?

सीमा शुल्क रिकॉर्ड से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, फाइनेंशियल टाइम्स ने पिछले महीने रिपोर्ट दी थी कि अदानी समूह ने 'ऐसा प्रतीत होता है कि उसने बाजार मूल्य से कहीं अधिक कीमत पर अरबों डॉलर का कोयला आयात किया है।'

इसमें कहा गया है कि 'डेटा लंबे समय से चले आ रहे आरोपों का समर्थन करता है कि देश का सबसे बड़ा निजी कोयला आयातक अदानी ईंधन की लागत बढ़ा रहा है और लाखों भारतीय उपभोक्ताओं और व्यवसायों को बिजली के लिए अधिक भुगतान करना पड़ रहा है।' लंदन स्थित ब्रॉडशीट ने 2019 और 2021 के बीच के आंकड़ों की जांच की और निष्कर्ष निकाला कि 'अडानी ने ताइवान, दुबई और सिंगापुर में अपतटीय मध्यस्थों का इस्तेमाल करके 5 अरब डॉलर मूल्य का कोयला आयात किया, जो कई बार बाजार मूल्य से दोगुने से भी अधिक था।' इसमें कोयले की यात्राओं का हवाला दिया गया, जिसके दौरान कोयले की कीमत में 'बेहिसाब 70 मिलियन डॉलर से अधिक की वृद्धि हुई।'

समाचार रिपोर्ट ने फिर से कोयला आयात के अधिक मूल्य निर्धारण के आरोपों की ओर ध्यान आकर्षित किया, जो इनकार के बावजूद अडानी को परेशान कर रहा था। विपक्षी कांग्रेस पार्टी ने आरोप लगाया कि अडानी समूह 'आधुनिक भारत के सबसे बड़े घोटाले के पीछे हो सकता है।' द हिंदू की रिपोर्ट के अनुसार, उन्होंने ताजा खुलासे का हवाला देते हुए संकेत दिया कि 'दो वर्षों में 12,000 करोड़ रुपये से अधिक की रकम देश से बाहर निकाली गई होगी।'

कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने दावा किया कि यह करोड़ों भारतीयों की जेब से ''कोई प्रतीकात्मक लूट नहीं बल्कि वस्तुतः चोरी'' है। उन्होंने कहा कि फाइनेंशियल टाइम्स में नवीनतम खुलासे, जिसमें 2019 और 2021 के बीच 3.1 मिलियन टन की मात्रा वाले 30 अदानी कोयला शिपमेंट की जांच की गई, कोयला व्यापार जैसे कम मार्जिन वाले व्यवसाय पर भी 52% लाभ पाया गया।

भाजपा ने लगातार इन आरोपों से इनकार किया है कि प्रधान मंत्री मोदी और उनकी सरकार की नीतियों के बीच कोई व्यक्तिगत मित्रता या संबंध है, जिसने अदानी को हाल के दिनों में किसी भी समूह की तुलना में सबसे तेज़ गति से बढ़ने की अनुमति दी है और भारत में बड़ी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को नियंत्रित करने में कामयाब रही है। लेकिन अडाणी समूह के कामकाज में अनियमितता के आरोपों पर रिपोर्टिंग कर रहे पत्रकारों को 'बुलाने' की कोशिश में गुजरात पुलिस के उत्साह ने मामले को और खराब कर दिया है।

इससे पहले, सुप्रीम कोर्ट को दो अन्य पत्रकारों रवि नायर और आनंद मंगनाले को अडानी-हिंडनबर्ग विवाद की जांच के सिलसिले में अंतरिम सुरक्षा देनी पड़ी थी।

विपक्ष की संसद सदस्य महुआ मोइत्रा के मामले ने पहले ही इस ओर ध्यान आकर्षित किया है कि कैसे संसदीय प्रक्रियाओं, नियमों और औचित्य को बढ़ाया गया है और इस मामले की जांच करने वाली आचार समिति के कामकाज में अक्सर उनका उल्लंघन किया गया है कि उन्होंने संसद में कैसे प्रश्न पूछे। समिति में विपक्षी दलों के मोइत्रा और उनके सहयोगियों का कहना है कि उन्हें निशाना बनाया जा रहा है क्योंकि वह सदन में भारत के सबसे बड़े बुनियादी ढांचा समूह, अदानी समूह के बारे में असहज सवाल उठाती हैं, जिसे बंद करना मुश्किल हो जाता है।

लगभग 120 प्रतिष्ठित नागरिकों ने भी महुआ मोइत्रा को लोकसभा से निष्कासित करने की विवादास्पद सिफारिश को 'सार्वजनिक हित के विरुद्ध' बताया है। उन्होंने यह भी कहा कि अडानी समूह के खिलाफ आरोपों पर मोदी सरकार की प्रतिक्रिया 'राजनीतिक कार्यकारी और बड़े व्यवसायों' के बीच सांठगांठ को दर्शाती है।

द इकोनॉमिस्ट के अनुसार, क्रोनी पूंजीवादी रैंकिंग में भारत शीर्ष दस देशों में से एक है। विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक ने मई, 2023 में भारत को 180 देशों में से 161वें स्थान पर रखा है।

साप्ताहिक समय माया

विद्युत लूट रोकने जनता बाहर निकल कंपनियों के विरुद्ध करे आंदोलन

पेज 1 का शेष

उसके अंतर्गत मध्य प्रदेश के राज्य विद्युत मंडल को भी पांच कंपनियां पूर्वी क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी, मध्य प्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड, मध्य प्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड, मध्य प्रदेश विद्युत उत्पादक कंपनी लिमिटेड, मध्य प्रदेश पावर मैनेजमेंट कंपनी लिमिटेड और मध्य प्रदेश स्टेट लोड डिस्पैच सेंटर जबलपुर में बांट दिया गया। इन सभी कंपनियों में देश की महाधूर्त प्रबंधन भारतीय प्रताड़ना सेवा के अधिकारियों को बैठा दिया गया। जबकि अनेकों राज्यों में बैठे हुए वहां के मुख्यमंत्रियों ने इन जाल साजियों को व भविष्य मी जनता के साथ किए जाने वाले छल कपट समझते हुए अपने राज्य विद्युत मंडलों को कंपनियों में नहीं बदला उसमें था सबसे पहले गुजरात, पश्चिम बंगाल उड़ीसा कर्नाटक केरल महाराष्ट्र मेघालय राजस्थान पंजाब बिहार तमिलनाडुआदि में अपने आप विद्युत मंडलों कोकंपनियों में नहीं बदला और उसके वहां की जनताजिंदा क्यों नहींअपने मंडलों को कंपनियों में बदल उनकी परीक्षा विद्युत आपूर्ति और उसके भुगतान के मामले में ज्यादा सुखी अनुभव करती है। पर उसे समय के तत्कालीन मुख्यमंत्री घोर भ्रष्ट जालसाज दिग्गी दानव नहीं इस मौके का फायदा उठाते हुएऔर मोटा धन कमाते हुएकंपनियों में बदल दिया।

इन सभी कंपनियों में बैठे घोर जालसाज महाभ्रष्ट डकैत भारतीय प्रताड़ना सेवा अधिकारियों को अध्यक्ष एवं प्रबंध संचालक के रूप में पदस्थ कर दिया गया जिन हरामखोरों को बिजली का क, ख, ग, घ भी नहीं आता था। उनको बसप्रबंधन कोहलकान चिल्लाना वसूली करनाऔर अधिनस्थ स्टाफ इशारों पर नाच के वसूली करना आता है। विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड में बैठे हुएतीनों कंपनियों केपूरे प्रदेश में जितने भी भारतीय प्रस्तावना अधिकारियों के साथ और राज्य सेवा अधिकारी के रूप में डाले गए मुख्य महाप्रबंधक मिलकर लगभग 1000-2000 करोड़ से ज्यादा का भ्रष्टाचार करके धन हजम कर जाते हैं। जिसकातरीका सबसे पहले बिलों में माफी नामा दूसरा बिलों में जालसाजी पूर्ण तरीके से मनमानी बिलिंग करके, जबकिप्रारंभ में विद्युत मंडल ने ऊर्जा खपत के लिए जो मीटर लगाए थे वह सभी मीटरयंत्र की हुआ करते थे और जिम 1 घंटे का 1000 वाट का एक यूनिट बिजली खपत मानी जाती थी। जबकि प्रारंभ में आप जानते हैं की ना तो एलईडी बल्ब हुआ करते थे जो साधारण बल्ब होते थे सौ, 200 वाट के भी बिल जो है महीने का30 35 युनिट होती थी। वर्तमान में जबकि 5 से10-15 वाट के बल्बों का उपयोग किया जाने लगा । पंखे हीटर जो अब माइक्रोवेव के रूप में उपलब्ध हैअधिकतम250 से 500 वाट के आते हैंऔरअति सूक्ष्म उपयोग से भीसभी कार्य कोसंपन्न करने के बाद में भी बिजली का बिल 50 से 100 गुना ज्यादा आने लगा यही कारण था की मध्य प्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेडने अपनी मनमानी लूप के लिए हरामखोर जालसाजों ने उपभोक्ता के संवैधानिक अधिकारों के विपरीत बिल देना ही बंद कर दिया। उपभोक्ताओं के साथचारों तरफ से न केवल लूट हो रही है वरन घंटे बिजलीबंद रहने के कारण उन्हें अनेकों प्रकार से क्षतियों का सामना करना पड़ रहा है। उसके लिएकानून में प्रावधान होने के उपरांत भी क्यावे उसे क्षति का 10 गुना भुगतान करते हैंजबकिबिल लेने के मामले में उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक और स्मार्ट मीटर लगाकर एक कमान्ड से ही कई गुना वसूली करना शुरू कर दी। आखिर इन मीटरों की जांच की स्वतंत्रता व्यवस्था क्यों नहीं की जाति और उसकी रिपोर्ट पर विद्युत वितरण की कंपनियों को दंडित क्यों नहीं किया जाता। शिकायत के मामले में भी सब उन्हीं के आदमी बैठे हुए हैं और लोग अदालत में भी जो है पूरी जालसाजी होती है लोक अदालतों में भी कंपनियों के ही आदमी बैठकर पीड़ित पक्षकारों को डराते धमकाते और मनचाही वसूली कर लेते हैं।

पर पीड़ितों को अपना पक्ष रखने या सीएम हेल्पलाइन में शिकायत करने के बाद में उल्टे ही या विद्युत मंडल के कर्मचारी अधिकारीधरने धमकाने बदतमीजी दिखानेगालियां बकनेअन्य प्रकार के संयंत्र करकेउसको हाथों उत्साहित करने का प्रयास करअपनी शिकायतें बंद करवा लेते हैंतो लूट के इस कांड का भी पूरा लाभकंपनियों में बैठेभारतीय प्रताड़ना सेवा अधिकारीव राज्य सेवा केप्रताड़ना अधिकारीलेकर मोटी कमाई करते रहते हैं। दूसरा खेल होता है बिजली की लाइनों ट्रांसफॉर्मर्स उप विद्युत वितरण केंद्र 11 किवो33 किवो 66 किवो के साथ132किलो वोल्ट के सब स्टेशनों का रखरखावतेल पानीआदि की व्यवस्था मेंहजारों लोगों को कुछ साल की निविदायक प्रकाशित की जाती हैं पर काम 10 से 20ञ का ही होता है जिससे न केवल लाइनों खंबो जिन पर हर 3 वर्ष में पुताई की जानी चाहिएपिछलेदशन साल से उन खंबो पर पुताई तो दूर सब स्टेशनों के खंबो ट्रांसफॉर्मर्स पर पुताई साफ-सफाई झाड़ झंखाड़ तक हटाए वह साफ किए जाते स्वाभाविक है लाइनों का मानसून पूर्व रखरखाव करने ट्रांसफॉर्मर्स का समय पर तेल ना बदले जाने के कारण शीघ्र खराब होकर अनेकों नई परेशानियां खड़ी करते हैं। इसके लिए भी उपयंत्रियों से लेकर सहायक संभागीय अधीक्षण और मुख्य अभियंता तक किसी प्रकार का कोई तनाव नहीं लेते और यही कारण है की छोटी सी हल्की सी हवा आंधी चलने पर अधिकांश क्षेत्रों कीज्यादा नुकसान ना हो विद्युत वितरण बंद कर आम साधारण उपभोक्ताओं से लेकर औद्योगिक व्यावसायिक उपभोक्ताओं को भी भारी परेशान किया जाता है।

आखिर बिल न देने का षड्यंत्र का मूल उद्देश्य यही है कि उपभोक्ता जिसे अपनी खपत और उसके शुल्क थोपे गए अनावश्यक अतिरिक्त शुल्क देखने और जानने के लिए मुदित देयक देना ही चाहिए। जो उसका संवैधानिक और मौलिक अधिकार है।

दूसरी तरफ जो ऑनलाइन की बिल लोड करने देखने, दिखाने की आड़ में पहले स्मार्ट मीटर जो कि 5 से 10 गुना तेज गति की खपत बता, लगाकर जो मनचाही बिलिंग और लूट की जा रही है। 90ञ उपभोक्ताओं को ऑनलाइन बिलिंग के बारे में इतनी ही जानकारी है, की विद्युत वितरण कंपनी अपनी नई जालसाजी डकैती के षड्यंत्र के अंतर्गतबिल नहींदे रही है और मनचाही लूट कर रही है। बिल देखने व भुगतान के लिए आपको ऑनलाइन ऐप डाउनलोड करने के साथ भरने के लिए आपका बैंक अकाउंट होना उसे ऑनलाइन लेनदेन की प्रक्रिया भी आनी चाहिए। अन्यथा वहां बैठे डकैत षड़यंत्रकारी आपकी लाइन काट देते हैं।

अगले षड्यंत्र मेंतैयारी यह है कि आपकास्मार्ट मीटर के माध्यम सेपूर्व भुगतान के आधार पर ही आपको विद्युत की आपूर्ति की जाएगीजो कि निजी कंपनियों के हाथ में दे दिया गया है सब अपने आप की जागीर है जनता के बने पैसे से खड़े किये गये विद्युत मंडल फिर उसके बाद में अपनी लूट के लिए बना दी गई कंपनियां और उन कंपनियों का जो मूल उद्देश्य था जनता को मनचाही लूट के लिए निजी हाथों में देकर खुला छोड़ दो।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह हैजनता के पैसे खड़े किये मंडल को कंपनियां मैं बदले जाते समय ही जनता को सड़कों पर निकल कर आंदोलन करना चाहिए था। तब भी मोरख औरनपुंसक मानचित्र की सोच वाली जनता सड़कों पर बाहर नहीं आईअब जब धीरे-धीरे लूट को अंजाम देने मैंकेनिक मीटर से इलेक्ट्रॉनिक मीटर इलेक्ट्रॉनिक मीटर से स्मार्ट मीटर लगा बिना बिल दिये निजी हाथों में देकर बहुउद्देशीय तरीके से जिसमें मीटर का किराया जबकि मी कीमतमें आप विद्युत संयोजन करने के साथ वसूल कर ली जाती है, विद्युत उपकर, अन्य अन्य को प्रकार के शुल्क जोड़कर वसूल कर रहे हैं आने वाले भविष्य में अगर भेड़िया झुंड पार्टी की सरकार रही तो विद्युत बिलों भी जीएसटी देनी पड़ेगी। और इन सब जलसा जिओ के विरुद्ध जनता को सड़क पर निकल आंदोलन के अतिरिक्त कोई चारा नहीं।

संविधान के मौलिक अधिकार जीवन जीने के आवश्यक शिक्षा रोजगार पानी सड़क आदि के साथ वर्तमान की महती अत्यंत आवश्यक सेवा विद्युत को भी जोड़ा जाना चाहिए।

दूसरी तरफ जानबूझकर सारे हरामखोर जालसाज भारतीय प्रताड़ना सेवा के अधिकारी जो अध्यक्ष व प्रबंध संचालक बनाकर बैठाए जाते हैं। अपनी लूट के लिए न केवल पूरी विद्युत उत्पादन, पारेषण, वितरण व्यवस्था के उचित व आवश्यक समयबध्द रखरखाव के पैसे को हजम करने हर जगह कटौती करते रहते हैं। के साथ ही जहां पूरे विद्युत मंडल मेंनियमित कर्मचारी भर्ती किए जाने चाहिए जानबूझकर न केवल 11, 33, 66, 132 कि वो उपविद्युत, वितरण केंद्रों पारेषण आदि पर भी दैनिक वेतन भोगी संविदा कर्मचारियों का नियोजित कर काम करवा रहे हैं जिनका यथार्थ में खातों में सूत्रों के अनुसार सा 27500 रुपए वेतन निकाला जाता है। पर वास्तविकता में 8 से 10, 12, 15000 ही वेतन उनको दिया जाता है। इसमें भीप्रबंध संचालकों से लेकर नीचे उप यंत्रियों तक का मोटा कमीशन बंधा होता है। आखिर भेडियों का झुंड अपनी लूट के लिएकिस प्रकार सेदेश की महत्वपूर्ण सेवाओं को बर्बाद करने पर तुला है। इस लूट को रोकने के लिए जनता को सड़कों पर आना ही पड़ेगा।

इंदौर उज्जैन संभागके 15 जिलों में पिछले डेढ़ साल से बिजली के बिल नहीं दिए जा रहे। जो बिल रु. 100 का आता था अब 1500 को आ रहा है 10 गुना लूट हो रही है। जबकि बाकी प्रदेश में हर जगह बिल बढ़ रहे हैंऔर वहां बदमाशी भी ज्यादा नहीं हो रहीस्मार्ट मीटर लगाने का उद्देश्य यही है कि आपके बिना बताए मनचाही लूट कंप्यूटर की एक कमांड से ही कि जा सके। पूरे भागीरथ पुरा में स्मार्ट मीटर से लूट का यह तांडव शुरू किया जा चुका है। वहां पर हरामखोर सहायक यंत्री व अन्य अधिकारी बैठते ही नहीं। मुमं हेल्पलाइन में शिकायत करने पर वहां बैठे जालसाजों हरामखोरों की फौज बिना कोई कारण दिए दबाव डलवा कर सारी शिकायत बंद करवा दी जाती हैं। यह षड़यंत्र निजीकरण करने पर अडानी अंबानी को कंपनियां देने पर मोटी कमाई और लूट के लिये किया जा रहा है।

चर्म रोगों से कैसे बचें

पेज 8 का शेष

इससे चेहरे के फोड़े, फुंसियां तथा मुहांसे ठीक हो जाते हैं।

इस रोग से पीड़ित व्यक्ति को तेल, खटाई, मसालेदार, नशीली चीजों आदि अम्लकारक खाद्य-पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे चर्म रोग और बढ़ने लगते हैं।

चर्म रोग से पीड़ित रोगी को धूप में बैठकर अपने शरीर पर शुद्ध सरसों के तेल की मालिश करनी चाहिए और उसके बाद रगड़-रगड़ कर ठंडे पानी से स्नान करना चाहिए। इस प्रकार से प्रतिदिन उपचार करने से यह रोग कुछ ही दिनों में ठीक हो जाता है।

चर्म रोग के होने का सबसे प्रमुख कारण पेट के रोग है इसलिए इस रोग का उपचार करने के लिए रोगी व्यक्ति को सादा और बिना चिकनाई वाले भोजन का सेवन करना चाहिए। इसके बाद चेहरे के मुंहासों का प्राकृतिक चिकित्सा से उपचार करना चाहिए।

चोकर सहित आटे की रोटी, दही और मट्ठे आदि का सेवन करने से चर्म रोग से पीड़ित व्यक्ति को बहुत अधिक लाभ मिलता है।

चर्म रोग से पीड़ित रोगी को कुछ दिनों तक प्रतिदिन 1-2 बार पेडू पर गीली मिट्टी की पट्टी का आधे-आधे घण्टे तक लेप करना चाहिए। यदि रोगी को कब्ज हो तो कब्ज को दूर करने के लिए प्राकृतिक चिकित्सा से इलाज करना चाहिए तथा 24 घण्टे में एक बार एनिमा लेना चाहिए।

किसी चौड़े मुंह वाले बर्तन में पानी भरकर, इसे आग पर उबलने के लिए रख दें। जब भाप निकलने लगे तो आग से बर्तन को उतार लें और लगभग 15 मिनट तक चेहरे पर भाप लें। इसके बाद मुलायम तौलिया से चेहरे को धीरे-धीरे रगड़कर साफ कर लें। इसके बाद ठंडे पानी से चेहरे को धो ले। इस प्रकार की क्रिया प्रतिदिन करने से चर्म रोग ठीक हो जाते हैं।

संतरे का छिलका पानी में पीसकर दिन में 3 बार चेहरे पर मलने से चेहरा साफ हो जाता है।

दही में काली चिकनी मिट्टी को मिलाकर लेप बना लें। इस लेप को रात के समय में चेहरे पर लगाकर सो जाएं। फिर इसके बाद सुबह के समय में उठकर चेहरे को धो ले। इस प्रकार से यह क्रिया कुछ दिनों तक करने से चर्म रोग जल्दी ठीक हो जाते हैं।

चर्म रोग से पीड़ित रोगी को आसमानी रंग की बोतल का सूर्यतप्त जल 20 मिलीलीटर की प्रति मात्रा में प्रतिदिन 6 से 7 बार पीने तथा शरीर के रोगग्रस्त भाग पर हरे रंग का प्रकाश दिन में 25 मिनट तक डालने से यह रोग कुछ ही दिनों में ठीक हो जाता है।

सावधानियां,,

चर्म रोग से पीड़ित रोगी को अपने भोजन में नमक का सेवन नहीं करना चाहिए।

चर्म रोग से पीड़ित रोगी को चीनी, रिफाइण्ड में बने खाद्य पदार्थ, चाय, कॉफी आदि का सेवन नहीं करना चाहिए।

चर्म रोग से पीड़ित रोगी को एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसका मूत्र साफ होता रहे, त्वचा से पसीना निकलता रहे, फेफड़े ठीक काम करते रहें और पेट में कब्ज न होने पाए।

ठंडा, खट्टा और तला हुआ भोजन एवॉइड करें। आयुर्वेद अपनाएं स्वस्थ जीवन पाए,जय श्री राम।

प्रदेश का पूरा परिवहन विभाग चलाते हैं, दलाल

पेज 8 का शेष

नि:संदेह न केवल परिवहन विभाग में वरन पूरे मध्य प्रदेश के सभी विभागों में स्टाफ बाबूओं से लेकर निरीक्षकों अधिकारियों इंजीनियर डॉक्टर तक का आवश्यकता का मात्र 20 से 30% ही काम कर रहा है। क्योंकि पिछले 20 सालों सेसभी वर्गों में भर्तियां नहीं की गई। एक-एक बाबू ने पूरे मध्य प्रदेश के सभी क्षेत्रीय परिवहन कार्यालयों से लेकर जिला परिवहन कार्यालयों तक अपने द्वारा किए जा रहे भ्रष्टाचार के शुल्क में से कुछ शुल्क देकर अपने सहायक बाहरी कर्मचारियों की नियुक्तियां कर रखी है। अधिकांश वसूली वही करते हैं पकड़े जाने पर आसानी से उनको बाहरी आदमी बता कर बचा लिया जाता है। जहां तक परिवहन कार्यालयों में भ्रष्टाचार का सवाल हैतो जिला व क्षेत्रीय परिवहन अधिकारियों के जलवे राजा महाराजाओं से काम नहीं होते सारे एजेंट और कर्मचारियों का जलसा स्टाफउनको राजा की तरह सम्मान देता है और वह राजा साहब जो होते हैं मात्र दो-चार घंटे के लिए ही कार्यालय में आते हैं बाकी सारे काम उल्टे सीधे काम परमिट से लेकर पंजीयन अति विशिष्ट व्यक्तियों व उनकी सभाओं, शासकीय कार्यक्रमों जैसे कि इंदौर में इन्वेस्टर मीट खिलाड़ियों की मीट व अन्य सभाओं के आगंतुकों, श्रोताओं भीड़ लाने चुनाव आदि संपन्न करवाने के लिए जो वहां लगाए जाते हैं उसमें भी मात्र 30 से 40% से वाहनों का उपयोग किया जाता है बाकी 50 से 60% वाहनों के फर्जी बिल लूना स्कूटर ट्रक ऑटो के नंबर लगा जिलाधीश व क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी जिला अधिकारी हजम कर जाते हैं।

एआईसीटीसीएल में चलने वाली अधिकांश बसें जो 9फुट बाय 36 फुट की 55 सीट होने के बाद 100 लोग यात्रा करते हैं। सब 35 सीटर वाहनों में पंजीकृत हैं।उसके संचालक मंडल में आयुक्त जिलाधीश क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी महापौर निगम आयुक्त आदि उच्च अधिकारी बैठे होने के बाद में भी खुद सरकारी अधिकारी ही सरकार चूना लगा रहे हैं। जिन बसों को जनता सरकारी समझती है। वह सब सरकारी धन जो केंद्र सरकार ने 20000 करोड रुपए दिए थे। पूरे प्रदेश में पुनः राज्य परिवहन विभाग को क्षेत्रीय व प्रादेशिक शासकीय परिवहन मैं बसों को खरीद कर स्थापित और विकसित करने के लिए उस सबका धन हजम कर, जिलों में स्वयं के हर जिले केअपनी सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था इसी प्रकार सारी बसें बैंक ऋण से खरीद कर वहां संलग्न कर दी गई हैं। एलसीटीसीएल की मशीनएक तरफजनता सेदोगुना से ज्यादा कराई भी वसूल करती हैंसुविधा भी नहीं देतीतो दूसरी तरफअपने ही कर्मचारीजो अधिकांश संविदा और दैनिक वेतन भोगी पर काम कर रहे हैं घोर शोषण कर रही है। यह व्यवस्था पूरे प्रदेश मेंभाजपा की सरकारपिछले 18 सालों से कर रही थी और अगले 5 साल और करेगीक्योंकिएवं की जांच शादी सेउसने आखिरी तीन दिन में पूरी मशीनों को पलटा कर सत्ता हथिया ली है। आपके संदर्भ के लिए मैंनेकेंद्र सरकार का वह बजट नोटिफिकेशन संलग्न किया है।

चीन व अमेरिका विश्व को बांट रहे घातक बीमारियों - भाग 2

वस्त्र, परिधान, मोबाइल स्मार्ट वॉच औषधियां खिलौने स्वास्थ्य के लिए घातक

(पिछले अंक का शेष)

वस्त्रों से अकार्बनिक और कार्बनिक रसायनों के संपर्क के कारण मानव स्वास्थ्य जोखिमः एक समीक्षा

यह सर्वविदित है चीनी कपड़ा उद्योग में उपयोग किए जाने वाले कई पदार्थों का मतलब न केवल पर्यावरण, बल्कि स्वास्थ्य समस्याएं भी हो सकता है। उस उद्योग में रासायनिक पदार्थों के संभावित प्रतिकूल स्वास्थ्य प्रभावों के बारे में वैज्ञानिक साहित्य मुख्य रूप से कपड़ा उत्पादन के दौरान मानव जोखिम से संबंधित है। हालाँकि, उपभोक्ताओं के संपर्क के बारे में जानकारी बहुत सीमित है। यद्यपि वस्त्रों में रसायनों के स्वास्थ्य प्रभावों पर अधिकांश शोध एलर्जी त्वचा प्रतिक्रियाओं से संबंधित हैं, संपर्क एलर्जी एकमात्र संभावित मानव स्वास्थ्य समस्या नहीं है। इस पेपर में, हमने त्वचा-संपर्क कपड़ों के माध्यम से रसायनों के मानव संपर्क के संबंध में वर्तमान वैज्ञानिक जानकारी की समीक्षा की है। समीक्षा मुख्य रूप से उन रसायनों पर केंद्रित है जिनके कपड़ों में पाए जाने की संभावना अधिक थी। इस प्रकार, हमने ज्वाला मंदक, ट्रेस तत्व, सुगंधित एमाइन, क्विनोलिन, बिस्फेनोल, बेंज़ोथियाज़ोल/बेंज़ोट्रायज़ोल, फ़ेथलेट्स, फॉर्मेल्डिहाइड और धातु नैनोकणों की उपस्थिति को संशोधित किया है। त्वचा-संपर्क वाले वस्त्रों/कपड़ों के माध्यम से संभावित जहरीले रसायनों के संपर्क में आने से मानव त्वचा पर कुछ वस्त्रों में गैर-नगण्य उपस्थिति दिखाई देती है, जिससे संभावित प्रणालीगत जोखिम हो सकते हैं। एक्सपोज़र की विशिष्ट परिस्थितियों में, कुछ रसायनों की उपस्थिति का मतलब उपभोक्ताओं के लिए कैंसर का जोखिम नहीं हो सकता है।

परिचय

कपड़ा उद्योग कपास या ऊन जैसे कच्चे माल को लेने और उसे सूत में बदलने के लिए जिम्मेदार है, जिसका उपयोग बाद में कपड़ा बनाने के लिए किया जाता है। कच्चे माल को तैयार उत्पाद में परिवर्तित करने में शामिल सभी प्रक्रियाएं - वस्त्रों का विकास, उत्पादन, विनिर्माण और वितरण-कपड़ा उद्योग में शामिल हैं, जो दो प्रमुख श्रेणियों, प्राकृतिक और सिंथेटिक, के साथ कई प्रकार के कपड़ों का उपयोग करता है। प्राकृतिक कपड़े वे होते हैं जो जानवरों और पौधों से प्राकृतिक रूप से प्राप्त होते हैं, जबकि सिंथेटिक कपड़े प्रयोगशाला में बनाए जाते हैं और मानव निर्मित होते हैं।

चीन दुनिया का सबसे बड़ा कपड़ा उत्पादक और निर्यातक देश है। 2016 में, चीन लगभग 106 बिलियन अमेरिकी डॉलर के मूल्य के साथ शीर्ष रैंक वाला वैश्विक कपड़ा निर्यातक था, इसके बाद 65 बिलियन डॉलर के मूल्य के साथ यूरोपीय संघ (28 देश) था। भारत, अमेरिका और तुर्की क्रमशः 16, 13 और 11 बिलियन डॉलर के मूल्य के साथ निम्नलिखित होंगे (स्टेटिस्टा, 2016)। कपड़ों के संबंध में, चीन और यूरोपीय संघ-28 भी 2016 में शीर्ष दो निर्यातक थे, इसके बाद बांग्लादेश, वियतनाम, भारत, हांगकांग और तुर्की का स्थान था। विश्व व्यापार सांख्यिकी समीक्षा (2016) के अनुसार, 2016 में विश्व कपड़ा (एसआईटीसी 65) और परिधान (एसआईटीसी 84) निर्यात का वर्तमान डॉलर मूल्य क्रमशः 284 अरब डॉलर और 443 अरब डॉलर था।

जैसा कि अन्य औद्योगिक गतिविधियों के साथ होता है, कपड़ा उद्योग में भी पर्यावरणीय समस्याएं हैं, यह सभी उद्योगों में सबसे पुराना और तकनीकी रूप से सबसे जटिल उद्योगों में से एक है। कपड़ा उद्योग में उपयोग किए जाने वाले कई पदार्थों का मतलब न केवल पर्यावरण, बल्कि स्वास्थ्य समस्याएं भी हो सकता है। कपड़ा अपशिष्ट जल में जिन कई रसायनों की उपस्थिति पाई गई है, उनमें रंग सबसे महत्वपूर्ण प्रदूषकों में से हैं (ब्रिलास एट अल., 2015; मोहम्मद एट अल., 2016; ज़ारे एट अल., 2018)। कपड़ा उद्योग से जुड़ी दुनिया भर में पर्यावरणीय समस्याएं मुख्य रूप से अनुपचारित अपशिष्टों के निर्वहन के कारण होने वाले जल प्रदूषण के साथ-साथ संभावित विषाक्त पदार्थों के उपयोग के कारण होती हैं, खासकर प्रसंस्करण के दौरान (कान और मलिक, 2013; पटनायक एट अल, 2018)

कपड़ा उद्योग में रासायनिक पदार्थों के संभावित प्रतिकूल स्वास्थ्य प्रभावों के बारे में वैज्ञानिक साहित्य मुख्य रूप से कपड़ा उत्पादन के दौरान मानव जोखिम से संबंधित है। इस प्रकार, कपड़ा और कपड़ों के निर्माण से जुड़े भौतिक खतरों के उदाहरणों में आग का जोखिम, भवन निर्माण, शोर, तापमान, आर्द्रता, असुरक्षित मशीनरी, धूल और हानिकारक रसायन शामिल हैं। इसके विपरीत, उपभोक्ताओं के संपर्क के बारे में जानकारी बहुत अधिक सीमित है (केईएम, 2014)। कपड़ा और कपड़ा उद्योग में कई गतिविधियाँ शामिल हैं, जिनमें कच्चे माल के उपचार से लेकर परिष्करण गतिविधियाँ जैसे ब्लीचिंग, छपाई, रंगाई, संसेचन, कोटिंग, प्लास्टिकीकरण आदि शामिल हैं। इन गतिविधियों के परिणामस्वरूप, मुख्य रासायनिक प्रदूषक रंग हैं, जिसमें कार्सिनोजेनिक एमाइन, धातु, पेंटाक्लोरोफेनोल, क्लोरीन ब्लीचिंग, हैलोजन वाहक, मुक्त फॉर्मेल्डिहाइड, बायोसाइड्स, अग्निरोधी और सॉफ़्नर (ब्रिग्डेन एट अल, 2012) शामिल हैं।

वस्त्रों में रसायनों के स्वास्थ्य प्रभावों के बारे में अधिकांश शोध एलर्जी त्वचा प्रतिक्रियाओं से संबंधित हैं। सिंथेटिक रेशों को दागने के लिए उपयोग किए जाने वाले फैलाने वाले रंगों को कपड़ा एलर्जी का सबसे आम कारण बताया गया है, रंगों को फैलाने के लिए संपर्क एलर्जी होना एक चिकित्सकीय रूप से प्रासंगिक समस्या है (रयबर्ग एट अल., 2006, रायबर्ग एट अल., 2009, मैलिनॉस्कीन एट अल। , 2013, कोमन एट अल., 2014)। हालाँकि, संपर्क एलर्जी एकमात्र मानव स्वास्थ्य समस्या नहीं है।

यह सर्वविदित है कि मनुष्य मुख्य रूप से आहार (भोजन और पीने के पानी) और सांस लेने (वायु प्रदूषण) के माध्यम से विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आते हैं। हालाँकि, कुछ रसायनों के लिए त्वचीय जोखिम को कम नहीं किया जाना चाहिए। त्वचीय जोखिम के संबंध में, हालांकि कपड़े बनाने की प्रक्रिया के दौरान जोड़े गए अधिकांश रसायनों को धोया जाता है, कुछ पदार्थों की अवशिष्ट सांद्रता बनी रह सकती है और उपभोक्ताओं द्वारा उपयोग के दौरान जारी की जा सकती है (लुओंगो एट अल।, 2014)।

उपरोक्त के आधार पर, इस पेपर का मुख्य लक्ष्य त्वचा-संपर्क कपड़ों के माध्यम से रसायनों के मानव संपर्क के बारे में वर्तमान जानकारी की समीक्षा करना है। वर्तमान पेपर केवल त्वचा के संपर्क में आने वाले वस्त्रों में मौजूद रसायनों पर केंद्रित है। इस कारण से, परफ़्लुओरिनेटेड यौगिक जैसे रसायन, जो विशिष्ट कपड़ों (यानी जलरोधक) से जुड़े होते हैं, को इस समीक्षा में शामिल नहीं किया गया था।

अनुभाग स्निपेट अग्निशामक

रेशों और कपड़ों में योजकों की उपस्थिति पर एक समीक्षा में, जो पिछली शताब्दी के सत्तर के दशक में प्रकाशित हुई थी, बार्कर (1975) ने माना कि सभी रेशों और कपड़ों में प्रदूषकों और योजकों की औसत दर्जे की मात्रा होती है। यह निष्कर्ष निकाला गया कि जबकि रेशों के संदूषण का स्तर- सामान्य शब्दों में -काफी कम था, उदाहरण के लिए, ज्वाला प्रतिरोध, या तेल और पानी से बचाने के लिए उपचारित कपड़ों में उस समय अतिरिक्त रसायनों की महत्वपूर्ण सांद्रता मौजूद थी।

तत्वों का पता लगाना

वस्त्रों में मुख्य विषैले प्रदूषक रंग हैं, जिनमें सुस्थापित विषाक्तता वाले विभिन्न रसायन होते हैं। इनमें से, कपड़ा सामग्री में कई जहरीले ट्रेस तत्व पाए जा सकते हैं क्योंकि वे अक्सर विभिन्न कपड़ा प्रक्रियाओं में मौजूद होते हैं। इसके अलावा, कच्चे कपड़ा सामग्री में कई ट्रेस तत्व भी हो सकते हैं। कपड़ा उत्पादों और कपड़ों में धातुओं का उपयोग कई उद्देश्यों के लिए किया जाता है, जैसे धातु जटिल डाई (कोबाल्ट, तांबा, क्रोमियम, सीसा), रंगद्रव्य, मोर्डेंट (क्रोमियम)।

ऐरोमैटिक ऐमीन

एज़ो रंग कपड़ा रंगों के सबसे महत्वपूर्ण वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं। यद्यपि विभिन्न सुगंधित अमाइन (एए) का उपयोग एज़ो रंगों (फ्रीमैन, 2013) के संश्लेषण में मध्यवर्ती के रूप में किया गया है, यह सर्वविदित है कि एए में अन्य विषैले प्रभावों के साथ-साथ कार्सिनोजेनिक और जीनोटॉक्सिक गुण हो सकते हैं, साथ ही एलर्जेनिक क्षमता भी हो सकती है (ब्रुशवीलर एट)। अल., 2014, ब्रुशवीलर और मर्लोट, 2017, प्लैटज़ेक, 2010)। इसके अलावा, एज़ो रंगों का त्वचीय, प्रणालीगत और जीवाणु बायोट्रांसफॉर्मेशन, बदले में रिलीज हो सकता है।

क्विनोलिन, बिस्फेनॉल्स, बेंज़ोथियाज़ोल्स और बेंज़ोट्रायज़ोल्स

क्विनोलिन और डेरिवेटिव, बिस्फेनॉल्स (बीपीए), बेंज़ोथियाज़ोल्स (बीटीएच) और बेंज़ोट्रायज़ोल्स (बीटीआर) ऐसे रसायन हैं जिनका उपयोग कपड़ों के वस्त्र लेखों सहित अनुप्रयोगों की एक विस्तृत श्रृंखला में किया जाता है। क्विनोलिन, एक विषमकोणीय सुगंधित कार्बनिक यौगिक और इसके डेरिवेटिव का उपयोग कपड़ा उद्योग में रंगों के निर्माण के लिए बड़े पैमाने पर किया जाता है। उनमें से कुछ त्वचा में जलन पैदा करने वाले और/या संभावित मानव कार्सिनोजन भी हैं। इन पदार्थों की मौजूदगी कपड़ा सामग्री में बताई गई है (यांग एट अल., 2013)

फ़थलेट्स

फ़थलेट्स, रासायनिक यौगिकों की एक विस्तृत श्रृंखला, मुख्य रूप से कोमलता और लचीलेपन को बढ़ाने के लिए प्लास्टिक (विशेष रूप से पीवीसी) में प्लास्टिसाइज़र के रूप में उपयोग की जाती है। पीवीसी प्रिंट कपड़ा उद्योग में फ़ेथलेट्स के उपयोगों में से एक है; प्लास्टिसाइज्ड पीवीसी जिससे लंबे समय तक त्वचा का सीधा संपर्क हो सकता है। यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि मुद्रित पीवीसी वाले वस्त्रों के अंतिम उपभोक्ता बच्चे हैं, जो अपनी विकासात्मक स्थिति के कारण इन अंतःस्रावी विघटनकारी यौगिकों के लिए सबसे कमजोर समूह हैं (मार्टिनेज)

फॉर्मेल्डिहाइड

कैंसर पर अनुसंधान के लिए अंतर्राष्ट्रीय एजेंसी (IARC) फॉर्मेल्डिहाइड को मनुष्यों के लिए मानव कैंसरकारी के रूप में वर्गीकृत करती है (समूह 1) (IARC, 2012)। लंबे समय से, वस्त्रों और कपड़ों को एंटी-क्रीजिंग गुणों में सुधार करने के लिए फॉर्मेल्डिहाइड रिलीजिंग यौगिकों और रेजिन के साथ इलाज किया गया है (एल्डैग एट अल।, 2017)। 1950 और 1960 के दशक में, टिकाऊ प्रेस रासायनिक परिष्करण यूरिया-फॉर्मेल्डिहाइड राल और मेलामाइन/फॉर्मेल्डिहाइड राल पर आधारित थे, जो काफी मात्रा में फॉर्मेल्डिहाइड जारी करते थे।

नैनोकणों

हाल के वर्षों में, धातु नैनोकणों के उपयोग का मतलब कई औद्योगिक क्षेत्रों के लिए जबरदस्त उछाल है। नवीन नैनोमटेरियल्स के निर्माण की क्षमता के कारण इंजीनियर्ड नैनोपार्टिकल्स (ईएनपी) और इंजीनियर्ड नैनोमटेरियल्स (ईएनएम) का उत्पादन और उपयोग बढ़ गया है। इनमें से, कपड़ा उद्योग में धातुओं के ईएनपी का तेजी से उपयोग किया जा रहा है (सोम एट अल., 2011, मोंटेजर एट अल., 2014, यतिसेन एट अल., 2016) सिल्वर-ईएनपी की रोगाणुरोधी गतिविधि और टिटानिया का यूवी-अवशोषण-ईएनपी अच्छे हैं।

निष्कर्ष

कपड़ों को वस्त्रों में परिवर्तित करने की प्रक्रिया के दौरान जोड़े गए अधिकांश रसायनों को धो दिया जाता है। हालाँकि, इससे यह नहीं रुकता कि तैयार उत्पादों में अवशिष्ट स्तर बना रह सकता है, जो उपभोक्ताओं द्वारा उपयोग के दौरान जारी किया जा सकता है। यद्यपि यूरोपीय संघ में नियोजित कई खतरनाक यौगिकों के लिए महत्वपूर्ण नियंत्रण उपाय हैं, कम पर्यावरणीय प्रतिबंधों और कार्य मानकों वाले देशों में कपड़ा उत्पादन का निरंतर स्थानांतरण, जटिल कच्चा माल चीन व अमेरिका विश्व को घातक बीमारियों मोबाइल स्मार्ट वॉच औषधियां खिलौने वस्त्र स्वास्थ्य के लिए घातक विश्व के अनेको देशों की कृषि स्वास्थ्य प्रयोगशालाओं के निष्कर्ष, अमेरिका व चीन विश्व में जो अपने इलेक्ट्रॉनिक उपकरण स्मार्ट वॉच मोबाइल मोबाइल टावर से घातक रेडियोएक्टिव तरंगों से, कृषि में घातक कीटनाशक जो युरोपियन देशों में प्रतिबंधित हैं, खिलौने, पटाखे पतंग के धागे, खाद्य वस्तुएं, औषधियां, घातक कृत्रिम तत्वों, रंगों से निर्मित वस्त्र आदि जो मानव शरीर को त्वचा रोगों से फिर लेकर नपुंसकता, हृदय, यकृत, प्लीहा, गुर्दों, आंखों को कमजोर करने, की बीमारियों के साथ इन सब शरीर के अंगों को निस्तेज करने से मृत्यु तक व आबुर्द, क्षय, अस्थमा, जैसी दीर्घकालीन बीमारियां बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक को अपनी घातक महंगी दवाइयां उपकरण टीके आदि बेंचने का षड्यंत्र कर मोटी कमाई कर रहे हैं। इसके लिए आवश्यक है कि हम पुनः भारत के पुरातन आयुर्वेद की तरफ प्रकृति के साथ मिलकर प्राकृतिक तरीके से इन सब का बहिष्कार कर सुखद और स्वास्थ्य जीवन जीने का प्रयास करें। वस्त्रों की घातकता के कुछ महत्वपूर्ण विश्व के अनेक देशों की प्रयोगशालाओं के निष्कर्ष प्रस्तुत है।

साप्ताहिक समय माया

पैकैज्ड खाद्य, कृत्रिम वस्त्रों के उपयोग से फैल रहे

चर्म रोगों से कैसे बचें

प्राकृतिक ताजे खाद्यों व सूती वस्त्रों का उपयोग करें

हमारे शरीर की त्वचा मुख्य रूप से मल,निष्कासक अंगों के अन्तर्गत आती हैं।

त्वचा के माध्यम से प्रतिदिन पसीने के रूप में हमारे शरीर की अधिकांश गंदगी बाहर निकलती रहती है।

जब तक हमारी त्वचा स्वस्थ रहती है तब तक शरीर के अन्दर किसी भी प्रकार की गंदगी नहीं रहती हैं।

लेकिन जब किसी कारण से यह अस्वस्थ हो जाती है तब इसके छिद्र बंद हो जाते हैं या शरीर में गंदगी का भार इतना अधिक बढ़ जाता है कि वह इस अंग द्वारा बाहर नहीं निकल पाती तो प्रकृति शरीर को मल-भार से मुक्त करने के लिए बहुत से रोग उत्पन्न कर देती है। जिससे यह गंदगी शरीर के बाहर निकलने लगती है।

चर्म रोग इस प्रकार हैं

खाज, खुजली, दाद, फोड़े, फुन्सियां, उकवात, पामा, छाजन, कुष्ठ,चेचक और कण्ठमाला आदि। ये सभी चर्म रोग की श्रेणी में आते हैं।

चर्म रोग के लक्षण

इस रोग से पीड़ित रोगी की त्वचा पर सूजन हो जाती है तथा उसके फोड़े,फुंसियां निकलने लगता है।

रोगी व्यक्ति को खुजली तथा दाद हो जाता है और उसके शरीर पर छोटे,छोटे लाल या पीले दाने निकल आते हैं।

चर्म रोग होने के मुख्य कारण

चर्म रोग होने का सबसे प्रमुख कारण शरीर में दूषित द्रव्य का जमा हो जाना होता है।

चर्म रोग कभी भी स्थानीय नहीं होते हैं। बल्कि अन्य रोगों की तरह ही यह शरीर के अन्दर खराबी और गंदगी के कारण होते हैं।

चर्म रोग भूख से अधिक भोजन करने, संतुलित भोजन न करने, उचित तथा नियमित व्यायाम न करने, आराम न करने, अच्छी तरह से नींद न लेने के कारण होता है।

चाय-कॉफी तथा नशीली वस्तुओं का अधिक सेवन करने के कारण भी यह रोग हो सकता है।

दूषित भोजन का सेवन करने के कारण भी चर्म रोग हो जाते हैं।

कब्ज, सिर में दर्द, पेचिश आदि अन्य रोगों के कारण भी चर्म रोग हो सकते हैं।

अधिक गर्म तथा ठंडे मौसम के कारण भी चर्म रोग हो जाते हैं।

पाचन क्रिया तथा यकृत में खराबी आ जाने के कारण चर्म रोग हो जाते हैं।

जिस व्यक्ति के पेट में कीड़ें होते हैं उसे भी चर्म रोग हो जाते हैं।

शरीर की अच्छी तरह से सफाई न करने के कारण भी चर्म रोग हो जाते हैं।

गीले वस्त्र तथा अधिक गर्म वस्त्र पहनने के कारण भी चर्म रोग हो जाते हैं।

मानसिक तनाव चिंता के कारण भी चर्म रोग हो सकते हैं।

रोगी व्यक्ति के वस्त्रों को पहनने तथा उसके द्वारा इस्तेमाल की गई चीजों का उपयोग करने से भी चर्म रोग हो जाते हैं।

चर्म रोग का प्राकृतिक चिकित्सा से उपचार

इस रोग से पीड़ित रोगी को कम से कम 7 दिनों तक गाजर, ककड़ी, पालक, गाजर, पत्तागोभी, सफेद पेठा आदि फलों का रस पीना चाहिए और उपवास रखना चाहिए। फिर कुछ दिनों तक बिना पका हुआ भोजन जैसे,सलाद, अंकुरित खाद्य-पदार्थों का सेवन करना चाहिए।

करेले के रस में नींबू का रस मिलाकर पीने से कुछ ही दिनों में चर्म रोग ठीक हो जाते हैं।

मेथीदाना को पानी में कम से कम 10 घण्टे तक भिगोकर रख लें। इस पानी को सुबह के समय में प्रतिदिन पीने से कुछ ही दिनों में चर्म रोग ठीक हो जाते हैं।

प्रतिदिन सुबह के समय में तुलसी की पत्तियां तथा अंजीर खाने से चर्म रोग ठीक हो जाते हैं।

नीम की पत्तियों को पानी में उबालकर उस पानी से स्नान करें तथा नीम के पानी से एनिमा क्रिया करें। इस प्रकार से प्रतिदिन उपचार करने से चर्म रोग ठीक हो जाते हैं।

चर्म रोग से पीड़ित रोगी को रोज कुंजल और शंख प्रक्षालन क्रिया करनी चाहिए। इसके साथ-साथ कुछ आसन तथा यौगिक क्रिया करने से भी रोगी को बहुत अधिक लाभ मिलता है।

इस रोग को ठीक करने के लिए कई प्रकार के आसन तथा यौगिक क्रियाएं हैं जिन्हें प्राकृतिक चिकित्सा से उपचार करने के साथ-साथ करने से चर्म रोग जल्दी ही ठीक हो जाते हैं। ये आसन तथा यौगिक क्रियाएं इस प्रकार हैं- सर्वांगासन, मत्स्यासन, सूर्य नमस्कार, योगनिद्रा, पश्चिमोत्तानासन, जालंधर, उड्डियान बंध, शीतली, कपालभाति तथा नाड़ीशोधन, भस्त्रिका आदि।

प्रतिदिन सूर्य तप्त हरी बोतल का पानी पीने तथा उसका तेल त्वचा पर लगाने से चर्म रोग जल्दी ही ठीक हो जाते हैं।

यदि रोगी व्यक्ति खाज पर तुलसी का रस या फिर नींबू का रस लगाए तो उसे बहुत अधिक लाभ मिलता है जिसके फलस्वरूप खाज ठीक हो जाती है।

नींबू के रस को नारियल के तेल में मिलाकर प्रतिदिन त्वचा पर लगाने से कई प्रकार के चर्म रोग ठीक हो जाते हैं।

नारियल के तेल में कपूर मिलाकर दाद या खाज पर लगाने से लाभ होता है।

दाद,खाज पर पुदीने का रस लगाने से ये जल्दी ही ठीक हो जाते हैं।

दाद पर गर्म ठंडा सेंक करके मिट्टी की पट्टी लगाने से दाद ठीक हो जाता है।

मस्से पर कच्चा आलू या कच्चा प्याज काटकर 2 सप्ताह तक दिन में 4 बार लगाने से लाभ होता है।

यदि किसी व्यक्ति को फोड़ा हो गया है तो उस पर पान का पत्ता गर्म करके या फिर अरन्डी का तेल लगाकर रात भर किसी पट्टी से बांध लें। इससे फोड़ा जल्दी पककर फूट जाएगा तथा उसके अन्दर की मवाद बाहर आ जाएगी और कुछ ही दिनों में फोड़ा ठीक हो जाएगा।

फोड़े पर हल्दी का लेप लगाने या फिर नमक मिले पानी से फोडे को धोने से फोड़ा पककर फूट जाता है और जल्दी ही ठीक हो जाता है।

फोड़े के ऊपर बर्फ बांधने से फोड़े का दर्द तथा सूजन कम हो जाती है। फोड़े की सिंकाई करके उस पर मिट्टी लेप करने से भी दर्द में आराम मिलता है।

यदि चेहरे पर किसी प्रकार के फोड़े या फुंसियां हैं तो तुलसी की कुछ पत्तियों को पानी में उबालकर इस पानी से चेहरे को धोएं। इस क्रिया को दिन में कम से कम 3 बार करने से चेहरे के फोड़े-फुंसिया ठीक हो जाती हैं।

बड़े चम्मच अजवायन को पीसकर चूर्ण बना लें और फिर इसे दही में मिलाकर पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को सोते समय चेहरे पर लगा लें और सुबह के समय में गुनगुने पानी से चेहरे को धो लें, **(शेष पेज 6 पर)**

परिवहन विभाग लुटेरों व डकैतों का अड्डा

प्रदेश का पूरा परिवहन विभाग चलाते हैं, दलाल

भारत सरकार के गजट नोटिफिकेशन संख्या 894 नई दिल्ली बृहस्पतिवार 29 दिसंबर 2016 व पड़ोसी राज्यों से 10 x तक ज्यादा शुल्क, वसूली जा रही है। इसलिए इन हरामखोर जालसाजों ने mptransport.gov.in की साइट परढेर सारी सूचना सूचना के अधिकार में प्रदर्शित कीपरंतु पूरी साइट पर मध्य प्रदेश की सरकार परिवहन मंत्री आयुक्त प्रधान सचिव जिन्होंने साइट को बारीकी से अध्ययन किया होगा हरामखोरों ने इस जालसाजी को छुपाने के लिए पूरी साइट पर कहीं भी वाहनों के पंजीयन, नवीनीकरण, अनुज्ञप्ति के बारे में पूरा शुल्क वसूली की वसूली को नहीं डाला। कारों व अन्य वाहनों के पंजीयन का 15 साल के बाद पुनःनवीनीकरण करवाने में गजट के अनुसार 1000 शुल्क लगना चाहिए। जिसे मध्य प्रदेश की डकैत सरकार भारत सरकार के नियमों के विपरीत 10500/- वसूल रही है। वही हाल नौसिखिया चालन के रुपए 150 की जगह रुपए 750 वह चलना अनुकृति के जहां दूसरों पर लगने चाहिए सीधे ढाई हजार रुपए वसूले जाते हैं। दूसरी तरफपूरे मध्य प्रदेश में सरकार नेसीधे जनता को फीस जमा करने की व्यवस्था नहीं कि वह सारे काम उन्होंने अपने दलालों को विशेष नंबर देकर सौंप दिए हैं। और हर एजेंट जो शुल्क जमा करता है। 1% के हिसाब से केवल धन जमा करने के लिए अपनी शुल्क लेता है। साथी सारे दस्तावेजऔर फोटो अपलोड करने की फुल कलर से लेता है। बाकी सारे काम जिसमें सारे बाबुओं से लेकर परिवहन सहायक, उप, जिला निरीक्षक और क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी तक की फीस शामिल होती है। (शेष पेज 6 पर)

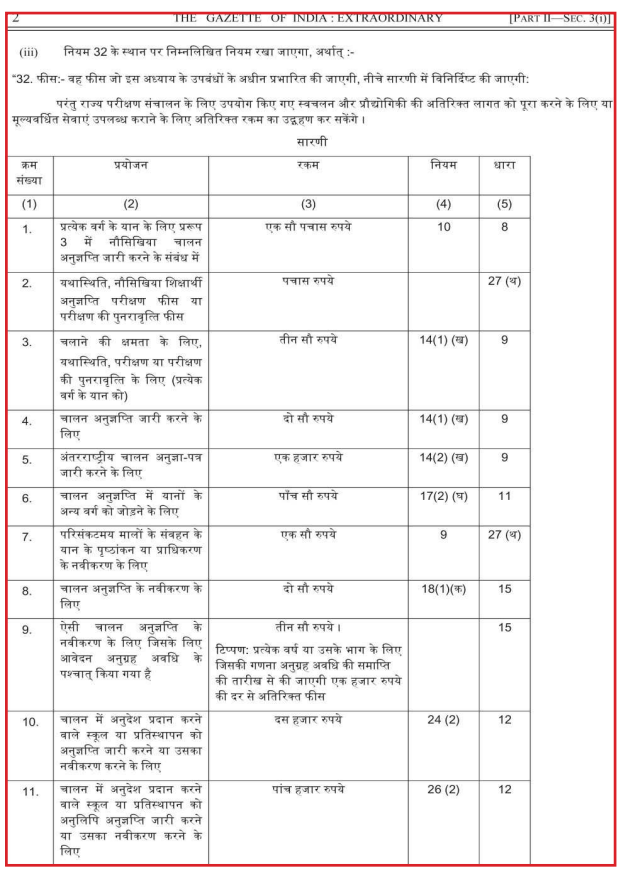

2 THE GAZETTE OF INDIA : EXTRAORDINARY [PART II—SEC. 3(i)]

(iii) नियम 32 के स्थान पर निम्नलिखित नियम रखा जाएगा, अर्थात् :-

"32. फीस:- वह फीस जो इस अध्याय के उपबंधों के अधीन प्रभारित की जाएगी, नीचे सारणी में विनिर्दिष्ट की जाएगी:

परंतु राज्य परीक्षण संचालन के लिए उपयोग किए गए स्वचलन और प्रौद्योगिकी की अतिरिक्त लागत को पूरा करने के लिए या मूल्यवर्धित सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए अतिरिक्त रकम का उद्ग्रहण कर सकेंगे ।

सारणी

क्रम संख्या	प्रयोजन	रकम	नियम	धारा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1.	प्रत्येक वर्ग के यान के लिए प्ररूप 3 में नौसिखिया चालन अनुज्ञप्ति जारी करने के संबंध में	एक सौ पचास रुपये	10	8
2.	यथास्थिति, नौसिखिया शिक्षार्थी अनुज्ञप्ति परीक्षण फीस या परीक्षण की पुनरावृत्ति फीस	पचास रुपये		27 (थ)
3.	चलाने की क्षमता के लिए, यथास्थिति, परीक्षण या परीक्षण की पुनरावृत्ति के लिए (प्रत्येक वर्ग के यान को)	तीन सौ रुपये	14(1) (ख)	9
4.	चालन अनुज्ञप्ति जारी करने के लिए	दो सौ रुपये	14(1) (ख)	9
5.	अंतरराष्ट्रीय चालन अनुज्ञा-पत्र जारी करने के लिए	एक हजार रुपये	14(2) (ख)	9
6.	चालन अनुज्ञप्ति में यानों के अन्य वर्ग को जोड़ने के लिए	पाँच सौ रुपये	17(2) (घ)	11
7.	परिसंकटमय मालों के संवहन के यान के पृष्ठांकन या प्राधिकरण के नवीकरण के लिए	एक सौ रुपये	9	27 (थ)
8.	चालन अनुज्ञप्ति के नवीकरण के लिए	दो सौ रुपये	18(1)(क)	15
9.	ऐसी चालन अनुज्ञप्ति के नवीकरण के लिए जिसके लिए आवेदन अनुग्रह अवधि के पश्चात् किया गया है	तीन सौ रुपये । टिप्पण: प्रत्येक वर्ष या उसके भाग के लिए जिसकी गणना अनुग्रह अवधि की समाप्ति की तारीख से की जाएगी एक हजार रुपये की दर से अतिरिक्त फीस		15
10.	चालन में अनुदेश प्रदान करने वाले स्कूल या प्रतिस्थापन को अनुज्ञप्ति जारी करने या उसका नवीकरण करने के लिए	दस हजार रुपये	24 (2)	12
11.	चालन में अनुदेश प्रदान करने वाले स्कूल या प्रतिस्थापन को अनुलिपि अनुज्ञप्ति जारी करने या उसका नवीकरण करने के लिए	पांच हजार रुपये	26 (2)	12

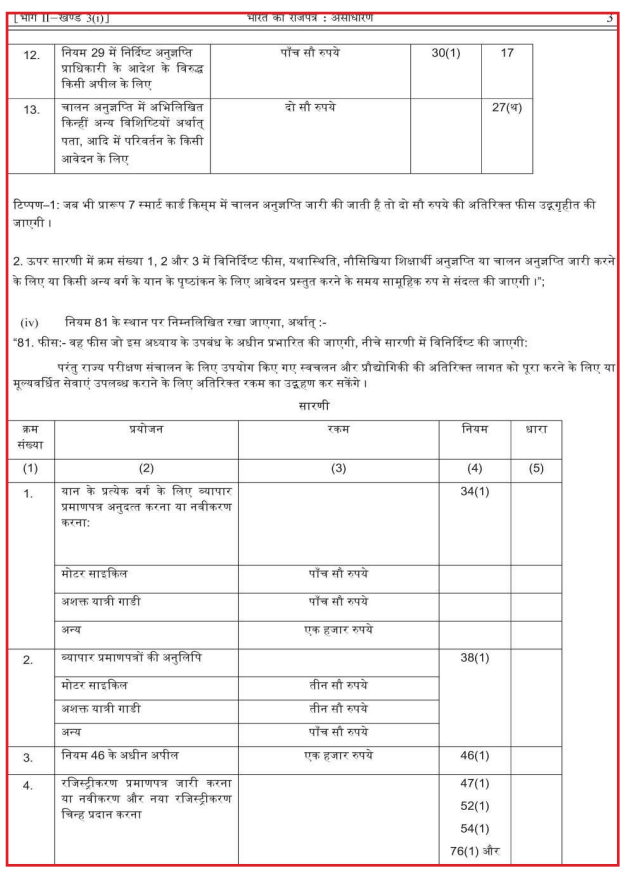

[भाग II—खण्ड 3(i)] भारत का राजपत्र : असाधारण 3

12.	नियम 29 में निर्दिष्ट अनुज्ञप्ति प्राधिकारी के आदेश के विरुद्ध किसी अपील के लिए	पाँच सौ रुपये	30(1)	17
13.	चालन अनुज्ञप्ति में अभिलिखित किन्हीं अन्य विशिष्टियों अर्थात् पता, आदि में परिवर्तन के किसी आवेदन के लिए	दो सौ रुपये		27(थ)

टिप्पण–1: जब भी प्रारूप 7 स्मार्ट कार्ड किस्म में चालन अनुज्ञप्ति जारी की जाती है तो दो सौ रुपये की अतिरिक्त फीस उद्ग्रहीत की जाएगी ।

2. ऊपर सारणी में क्रम संख्या 1, 2 और 3 में विनिर्दिष्ट फीस, यथास्थिति, नौसिखिया शिक्षार्थी अनुज्ञप्ति या चालन अनुज्ञप्ति जारी करने के लिए या किसी अन्य वर्ग के यान के पृष्ठांकन के लिए आवेदन प्रस्तुत करने के समय सामूहिक रुप से संदत्त की जाएगी ।";

(iv) नियम 81 के स्थान पर निम्नलिखित रखा जाएगा, अर्थात् :-

"81. फीस:- वह फीस जो इस अध्याय के उपबंध के अधीन प्रभारित की जाएगी, नीचे सारणी में विनिर्दिष्ट की जाएगी:

परंतु राज्य परीक्षण संचालन के लिए उपयोग किए गए स्वचलन और प्रौद्योगिकी की अतिरिक्त लागत को पूरा करने के लिए या मूल्यवर्धित सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए अतिरिक्त रकम का उद्ग्रहण कर सकेंगे ।

सारणी

क्रम संख्या	प्रयोजन	रकम	नियम	धारा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
1.	यान के प्रत्येक वर्ग के लिए व्यापार प्रमाणपत्र अनुदत्त करना या नवीकरण करना:		34(1)	
	मोटर साइकिल	पाँच सौ रुपये		
	अशक्त यात्री गाडी	पाँच सौ रुपये		
	अन्य	एक हजार रुपये		
2.	व्यापार प्रमाणपत्रों की अनुलिपि		38(1)	
	मोटर साइकिल	तीन सौ रुपये		
	अशक्त यात्री गाडी	तीन सौ रुपये		
	अन्य	पाँच सौ रुपये		
3.	नियम 46 के अधीन अपील	एक हजार रुपये	46(1)	
4.	रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र जारी करना या नवीकरण और नया रजिस्ट्रीकरण चिन्ह प्रदान करना		47(1) 52(1) 54(1) 76(1) और	

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक- अजमेरा एस.पी. कुमार द्वारा अपनी दुनिया प्रिंटर्स, 13 प्रेस कॉम्पलेक्स, ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 299, अम्बेडकर नगर, इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित।
संपादकः अजमेरा एस.पी. कुमार, मो. 9425125569, भोपाल प्रतिनिधि- एस.के. भारद्वाज मो. 9425637958